होशे की भविष्यवाणिय बुद्धि

अध्याय 1

होशे का परिचय

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1
पृष्ठभूमि 1
भविष्यवक्ता **2**
समय 2
स्थान 3
परिस्थितियाँ 4
उद्देश्य 8
होशे की पुस्तक **9**
समय 9
स्थान 11
परिस्थितियाँ 11
उद्देश्य 13
विषय-वस्तु और संरचना 14
दंड और आशा (1:2–3:5) **16**
पहले के पारिवारिक अनुभव (1:2–2:1) 17
परमेश्वर का मुक़द्दमा (2:2-23) 17
बाद के पारिवारिक अनुभव (3:1-5) 18
प्रकट होने वाला दंड (4:1–9:9) **19**
परमेश्वर के मुक़द्दमें (4:1–5:7) 20
चेतावनी के लिए परमेश्वर की बुलाहटें (5:8–9:9) 22
चेतावनी के लिए पहली बुलाहट (5:8–7:16) 22
चेतावनी की दूसरी बुलाहट (8:1–9:9) 23
आशा का प्रकट होना (9:10–14:8) **24**
फल (9:10-12) 25
बसा हुआ स्थान (9:13-17) 26
लहलहाती हुई दाखलता (10:1-10) 26
सीखी हुई बछिया (10:11-15) 27
प्रिय बालक (11:1–14:8) 27
उपसंहार 29

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

होशे की भविष्यवाणिय बुद्धि

अध्याय एक

होशे का परिचय

परिचय

क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो किसी अच्छी सलाह को नहीं सुनता। वे मूर्खतावश लोगों की अच्छी सलाह को ठुकरा देते हैं, और फलस्वरूप बार-बार ठोकर खाते हैं। कई रूपों में, भविष्यवक्ता होशे की सेवकाई के दौरान ऐसा ही हुआ था। होशे कई दशकों तक अपने लोगों को परमेश्वर का वचन सुनाता रहा। और यद्यपि हर बार उसकी भविष्यवानियाँ सही साबित हुईं, फिर भी परमेश्वर के लोगों ने बार-बार दुःख उठाया क्योंकि उन्होंने उसकी बातों को सुनने से इनकार कर दिया। फिर भी होशे ने हार नहीं मानी। अपने जीवन के अंत के करीब पवित्र आत्मा ने होशे की अगुवाई की कि वह अपनी भविष्यवाणियों का एक संकलन बनाए जिसे हम अब होशे की पुस्तक कहते हैं। उसने अपनी इस पुस्तक की रचना इसलिए की कि परमेश्वर के लोग अपने समय में जिन चुनौतियों का सामना करते थे उनके लिए उन्हें बुद्धि प्राप्त हो। और परमेश्वर से प्रेरित पुस्तक के रूप में होशे की पुस्तक हमारे सहित परमेश्वर के हर युग के लोगों को बुद्धि भी प्रदान करती है।

यह हमारी श्रृंखला *होशे की भविष्यवाणिय बुद्धि* का पहला अध्याय है, जिसका शीर्षक हमने "होशे का परिचय" दिया है। इस अध्याय में हम होशे की सेवकाई और उसकी पुस्तक से संबंधित कुछ परिचयात्मक विषयों की खोज करेंगे।

होशे का हमारा परिचय दो मुख्य भागों में विभाजित होगा। सबसे पहले हम भविष्यवक्ता होशे और उसकी पुस्तक की पृष्ठभूमि को देखेंगे। फिर हम इस पुस्तक की मूलभूत विषय-वस्तु और संरचना के एक संक्षिप्त विवरण का परिचय देंगे। आइए होशे की पुस्तक की पृष्ठभूमि के कई पहलुओं को खोजने के द्वारा आरंभ करें।

पृष्ठभूमि

होशे की भविष्यवाणियाँ पवित्र आत्मा से प्रेरित थीं, इसलिए पूरे इतिहास में परमेश्वर के सब लोगों पर उनका निर्विवाद अधिकार है। परंतु उसकी भविष्यवाणियों ने *सबसे पहले* प्राचीन इस्राएलियों और उन परिस्थितियों को संबोधित किया जिनका उन्होंने सामना किया था। जैसे कि हम इस अध्याय में देखेंगे, होशे की सेवकाई कई दशकों तक चलती रही। अतः जितना अधिक हम होशे की विकसित होती हुई परिस्थितियों की पृष्ठभूमि को समझ लेंगे, उतनी ही बेहतर रीति से हम उसकी भविष्यवाणियों को समझ पाएँगे और हमारे अपने समय में उन्हें लागू कर पाएँगे।

इससे पहले कि हम इन विषयों को देखें, हमें आपस में जुड़ी दो ऐतिहासिक परिस्थितियों, दो "संसारों" के बीच अंतर करना जरुरी है। पहली परिस्थिति, जिसे हम "वह संसार" कहेंगे, होशे की भविष्यवाणिय सेवकाई के उन दशकों को दर्शाती है जिनमें उसने परमेश्वर से प्रकाशनों को प्राप्त किया और बताया। परंतु दूसरी ऐतिहासिक परिस्थिति, जिसे हम "उनका संसार" कहेंगे, वह होशे के जीवन में बाद में घटित होती है। इस दूसरी परिस्थिति में होशे ने उन लोगों के जीवन में प्रभाव डालने के लिए अपनी कुछ भविष्यवाणियों को लिखा जिन्होंने सबसे पहले उसकी पुस्तक को प्राप्त किया था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

हम दो चरणों में इस द्विरूपी पृष्ठभूमि को देखेंगे। पहला, हम "उस संसार" या भविष्यवक्ता होशे की सेवकाई के पूरे दायरे की खोज करेंगे। और दूसरा, हम "उनके संसार" या उस परिस्थिति को जांचेंगे जिसमें होशे की पुस्तक को लिखा गया था। आइए भविष्यवक्ता होशे की सेवकाई के साथ आरंभ करें।

भविष्यवक्ता

होशे की भविष्यवाणिय सेवकाई के समय के आसपास ही कुछ राष्ट्रों ने परमेश्वर के लोगों के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिकाओं को निभाया। 930 ईसा पूर्व में दाऊद और सुलैमान का संयुक्त राज्य दो राज्यों में विभाजित हो गया : उत्तर में इस्राएल का राज्य और दक्षिण में यहूदा का राज्य। ये दोनों राज्य बड़े उल्लेखनीय रूप में होशे की भविष्यवाणिय सेवा में पाए गए। उस समय परमेश्वर के लोगों ने अराम और मिस्र जैसे देशों के साथ भी परस्पर व्यवहार किया। परंतु सबसे बढ़कर होशे ने अपनी सेवकाई को अश्शूर साम्राज्य से संबंधित घटनाओं पर केंद्रित की। होशे के समय में अश्शूर एक शक्तिशाली साम्राज्य बन गया था जिसने इस्राएल और यहूदा के क्षेत्रों सहित हर दिशा में अपना प्रभाव डाला। जैसे कि हम अभी देखेंगे, होशे की सेवकाई इस्राएल के यहूदा से अलग होने के लगभग दौ सौ वर्षों के बाद उत्तरी, अर्थात् इस्राएल राज्य में आरंभ हुई।

इतिहास की इस अवधि के दौरान उत्तरी इस्राएल में रहना उस व्यक्ति के लिए कठिन था जो परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बनना चाहता था। और यह होशे जैसे व्यक्ति के लिए विशेष रूप से मुश्किल था जिसे परमेश्वर ने अपना भविष्यवक्ता होने के लिए बुलाया था। होशे ने अपनी आँखों से देखा था कि कैसे इस्राएल के अगुवों ने अपने राज्य को परमेश्वर से दूर कर लिया था और उन्होंने अन्य राष्ट्रों के साथ अपने गठजोड़ तथा उनके झूठे देवताओं पर भरोसा किया था। इस्राएल के याजकों ने परमेश्वर की आराधना को मूर्तिपूजा से जुड़ी शराबी, कामुक फलदायकता की रीतियों के साथ मिला दिया था। अमीर और भी अधिक अमीर हो गए थे, परंतु गरीब इतने गरीब थे कि उन्हें भरपेट भोजन कमाने के लिए अपनी पत्नियों और बेटियों को मंदिर से जुड़ी वेश्यावृत्ति में धकेलना पड़ता था। और जब होशे ने उत्तरी इस्राएल में इन मर्मभेदी परिस्थितियों को देखा तो परमेश्वर ने उसे भविष्यवाणी करने के लिए बुलाया, अर्थात् इस्राएल के ईश्वरीय राजा की ओर से वह संदेश देने के लिए जिसे बहुत कम लोग सुनना चाहते थे। परमेश्वर अश्शूर के साम्राज्य के द्वारा इस्राएल के राज्य पर बड़े शाप डालने वाला था।

जब हम भविष्यवक्ता होशे की सेवकाई पर ध्यान देते हैं, तो हम परस्पर संबंधित चार विषयों को देखेंगे : उसकी सेवकाई का समय, इसका स्थान, होशे की बदलती परिस्थितियाँ, और उसकी भविष्यवाणिय सेवकाई का उद्देश्य या लक्ष्य। आइए उस समय पर ध्यान देने के द्वारा हम आरंभ करें जब होशे ने परमेश्वर के भविष्यवक्ता के रूप में सेवा की थी।

समय

पुराने नियम की कई अन्य भविष्यवाणिय पुस्तकों के समान ही पद 1:1 में होशे का पहला पद होशे की सेवकाई के समय से हमारा परिचय कराता है। सुनिए यह पुस्तक कैसे आरंभ होती है :

> **यहूदा के राजा उज्जियाह, योताम, आहाज, और हिजकिय्याह के दिनों में, और इस्राएल के राजा योआश के पुत्र यारोबाम के दिनों में, यहोवा का वचन बेरी के पुत्र होशे के पास पहुँचा (होशे 1:1)।**

राजाओं की यह सूची हमें होशे की सेवकाई के आरंभ और अंत की एक जानकारी प्रदान करती है। एक ओर, यह हमें बताता है कि होशे की सेवा यहूदा के राजा उज्जियाह और इस्राएल के राजा यारोबाम के दिनों में आरंभ हुई। इस यारोबाम को सामान्यतः उत्तरी इस्राएल के पहले राजा यारोबाम प्रथम से अलग रूप में यारोबाम द्वितीय कहा जाता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

उज्जियाह — या जिसे अजर्याह भी कहा जाता था — ने लगभग 792 से 740 ईसा पूर्व तक यहूदा पर राज्य किया था। और यारोबाम द्वितीय ने लगभग 793 से 753 ईसा पूर्व तक राज्य किया था। अधिकांश व्याख्याकार सही रूप से सुझाव देते हैं कि होशे की आरंभिक भविष्यवाणियों में उल्लिखित परिस्थितियाँ यारोबाम द्वितीय के शासन के अंतिम दशक के दौरान इस्राएल की दशा को दर्शाती हैं। अतः यह कहना उचित है कि होशे की सेवकाई लगभग 760 ईसा पूर्व के दौरान आरंभ हुई। इससे प्रमाणित होता है कि होशे अपनी सेवकाई के प्रति समर्पित बाइबल की पुस्तक के साथ यदि सबसे आरंभिक भविष्यवक्ता नहीं भी है, तो भी वह आरंभ के भविष्यवक्ताओं में से एक अवश्य है।

दूसरी ओर पद 1:1 में राजाओं की सूची हमें होशे की भविष्यवाणिय सेवा के अंत की जानकारी भी प्रदान करती है। होशे ने उज्जियाह, योताम और आहाज नामक यहूदा के राजाओं के शासन के दौरान सेवा की, और उसकी सेवकाई का अंत हिजकिय्याह के शासन के दौरान हुआ।

अपने पिता के साथ सह-शासन के समय बाद हिजकिय्याह 715 से 686 ईसा पूर्व तक यहूदा का अकेला शासक था। अब हम यह निर्धारित नहीं कर सकते कि होशे हिजकिय्याह के शासनकाल में कितने समय तक रहा, परंतु यदि उसने अपनी सेवकाई 20 वर्ष की आयु में लगभग 760 ईसा पूर्व में शुरू की, तो वह 686 ईसा पूर्व में 94 वर्ष का हो गया होगा। अतः संभावना यह है कि होशे की सेवकाई का अंत 686 ईसा पूर्व से कुछ पहले हो गया था।

भविष्यवक्ता होशे की सेवकाई के इस समय को मन में रखते हुए, आइए उस स्थान की ओर मुड़ें जहाँ उसने परमेश्वर के भविष्यवक्ता के रूप में सेवा की।

स्थान

होशे की पुस्तक का पहला पद हमें तब हमारे भविष्यवक्ता की सेवकाई के स्थान का एक महत्वपूर्ण प्रमाण देता है जब यह दर्शाता है कि होशे ने यारोबाम द्वितीय के शासन के दौरान सेवा की थी। यारोबाम द्वितीय का उल्लेख होशे के स्थान के विषय में दो बातों को प्रकट करता है। एक ओर, यह दर्शाता है कि होशे की सेवकाई यहूदा की अपेक्षा, इस्राएल के राज्य में आरंभ हुई।

> हम कई रूपों और इस पुस्तक के अनुच्छेदों के माध्यम से कह सकते हैं कि भविष्यवक्ता होशे ने इस्राएल के उत्तरी राज्य से सेवा आरंभ की थी। उदाहरण के लिए, पुस्तक के पद 1:1 में हम होशे के समकालीन राजाओं की सूची को पढ़ते हैं जब उनके शासन के दौरान यहोवा का वचन उसके पास पहुँचा था। उनमें से एक योआश का पुत्र राजा यारोबाम, या यारोबाम द्वितीय था जो इस्राएल का एक राजा था। यह दर्शाता है कि होशे की सेवकाई इस्राएल के राज्य से जुड़ी हुई थी। तथा इस पूरी पुस्तक में हम यहोवा को इस्राएल से सीधे-सीधे बात करते हुए देखते हैं। वह इस्राएल के विरुद्ध आने वाले दंड के बारे में बात करता है, और उनके पापों के कारण इस्राएल के लोगों के पापों को उजागर करता है। उदाहरण के लिए, पद 1:4 में परमेश्वर ने कहा कि वह इस्राएल के राज्य का अंत कर देगा। इसलिए इस्राएल के लिए यहोवा की ओर से स्पष्ट बात या संदेश इस्राएल के राजा यारोबाम के उल्लेख के अतिरिक्त यह दिखाने के संकेत हैं कि होशे की सेवकाई इस्राएल के उत्तरी राज्य से जुड़ी हुई थी।
>
> — रेव्ह. शेरिफ गेंडी

होशे की पुस्तक में उत्तरी राज्य की ओर दिशा-निर्धारण कई रूपों में प्रकट होता है, परंतु हमें दो महत्वपूर्ण बातों का उल्लेख करना चाहिए। पहली, हमारी पुस्तक की इब्रानी भाषा बड़ी मजबूती से सुझाव

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

देती है कि होशे उत्तरी राज्य का स्थानीय व्यक्ति था। हाल ही में किए गए कई अध्ययनों ने होशे की इब्रानी व्याकरण और फिनीकी — मुख्यतः उत्तरी तटीय क्षेत्रों में बोली जानेवाली पश्चिमी सेमी भाषा — व्याकरण के बीच समानताओं पर ध्यान दिया है।

दूसरी, यह विशेष रूप से बताता है कि होशे की पुस्तक की अधिकांश भविष्यवाणियाँ यहूदा की अपेक्षा इस्राएल पर ध्यान देती हैं। यह पुस्तक ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हुए स्पष्ट रूप से लगभग 81 बार उत्तरी राज्य का उल्लेख करती है, "इस्राएल," "इस्राएली" — शाब्दिक रूप से "इस्राएल की संतान" — और "एप्रैम", वह नाम जिसका प्रयोग होशे ने अक्सर इस्राएल के राज्य को दर्शाने के लिए किया था। इसके विपरीत, हमारी पुस्तक यहूदा के नाम का उल्लेख केवल 15 बार करती है। होशे विशेष रूप से उन घटनाओं से चिंतित था जो उत्तरी राज्य में घटित हुई थीं।

दूसरी ओर, हम होशे की सेवकाई के स्थान की एक अन्य विशेषता को देख सकते हैं जब हम ध्यान देते हैं कि पद 1:1 केवल यारोबाम द्वितीय का उल्लेख करता है और उत्तरी इस्राएल के उन छह अन्य राजाओं को छोड़ देता है जिन्होंने होशे के जीवनकाल में शासन किया था।

यारोबाम द्वितीय के बाद राजा जकर्याह, शल्लूम, मनहेम, पकह्याह, पेकह और होशे ने एक के बाद एक लगातार राज्य किया जब तक कि 722 ईसा पूर्व में इस्राएल की राजधानी शोमरोन अश्शूर के अधीन न हो गई। इस पुस्तक के पहले पद में इन राजाओं का उल्लेख न होने का कारण शायद यह हो सकता है कि 753 ईसा पूर्व में यारोबाम के शासनकाल के अंत के निकट होशे यहूदा को चला गया था। निस्संदेह यह भी संभव है कि होशे अपनी कुछ भविष्यवाणियों को बताने के लिए समय-समय पर उत्तरी इस्राएल को लौटा हो। यह भी संभव है कि होशे के चेलों और मित्रों ने उसके स्थान पर उत्तरी क्षेत्र में उसकी भविष्यवाणियों को प्रदान किया हो। परंतु जैसा भी हुआ हो, पद 1:1 में इस्राएल के अन्य राजाओं को न दर्शाना इस दृष्टिकोण का समर्थन करता है कि स्वयं होशे उत्तरी इस्राएल में यारोबाम द्वितीय के शासनकाल के अंतिम समय तक ही रहा था। तब या तो राजनैतिक उपद्रव या उसकी भविष्यवाणियों के विरोध के कारण उसने यहूदा के दक्षिणी राज्य में एक नए निवास को चुन लिया।

अब जब हमने भविष्यवक्ता होशे की सेवकाई के समय और स्थान पर चर्चा कर ली है, इसलिए हमें अब उन परिस्थितियों पर ध्यान देना चाहिए जिनका संबोधन उसने उन दशकों में किया जिनमें उसने परमेश्वर के भविष्यवक्ता के रूप में सेवा की।

परिस्थितियाँ

पवित्रशास्त्र के बहुत से विद्यार्थी होशे की सेवकाई के साथ जुड़े बाइबल-आधारित इतिहास के समय से अपरिचित हैं। निस्संदेह, राजाओं और इतिहास की ऐतिहासिक पुस्तकें, मीका और यशायाह जैसी भविष्यवाणिय पुस्तकें, और पुरातात्विक खोजें इस अवधि के बारे में बहुत कुछ बताती हैं। अतः ऐसी बहुत सी घटनाएँ हैं जिनका उल्लेख यहाँ नहीं किया जा सकता। परंतु हम उन अधिक महत्वपूर्ण घटनाओं की मूलभूत जानकारी के बिना आगे नहीं बढ़ सकते जो होशे की सेवकाई के दशकों के दौरान इस्राएल और यहूदा में घटी थीं।

एक पल के लिए कल्पना करें कि आप होशे हैं और यारोबाम द्वितीय के शासनकाल के दौरान उत्तरी राज्य में अपनी सेवकाई को शुरू कर रहे हैं। आप परमेश्वर पर भरोसा रखते है, परंतु जहाँ कहीं आप देखते हैं, वहीं इस्राएल का राजा, उसके याजकों और धनी लोगों ने राष्ट्र को एक कुस्वप्न में बदल दिया है। वे अन्य राष्ट्रों के झूठे देवताओं की आराधना करते हैं। वे देश को हिंसा से भर देते हैं। वे गरीबों के पुत्रों को अपने गुमराह सैन्य अभियानों की सेवा करने के लिए मजबूर करते हैं। और वे गरीबों की पत्नियों और बेटियों को मजबूर करते हैं कि वे उनके प्रजनन-संबंधी आराधना केंद्रों पर वेश्यावृत्ति करें। इन सब में भी अगुवे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होने का दावा करते हैं, और वे अपने धन और अधिकार को इसके प्रमाण के रूप में दर्शाते हैं कि परमेश्वर उनके सब कार्यों को अनुमोदित करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

अब होशे जानता था कि बहुत समय पहले मूसा ने चेतावनी दी थी परमेश्वर इस तरह के विद्रोह को सदा तक सहन नहीं करता रहेगा। वह अपने लोगों को दीन बनाने के लिए कठिनाइयों को भेजेगा। मूसा ने यह चेतावनी भी दी कि परमेश्वर उन्हें दंडित करने के लिए अन्यजाति के क्रूर और दुष्ट राष्ट्रों को खड़ा करेगा। और परमेश्वर ने होशे के सामने प्रकट किया कि परमेश्वर इस्राएल के साथ बिल्कुल ऐसा ही करने वाला था।

होशे के लिए अपनी मातृभूमि के विषय में यह जानना बहुत कष्टदायक था, और बाद में उसने यहूदा के विषय में भी ऐसी ही परिस्थितियों का सामना किया। जैसे-जैसे दशक बीतते गए, दक्षिणी राज्य के उसके नए निवासस्थान के अगुवे भी अपने उत्तरी पड़ोसियों के समान ही विद्रोह में पड़ गए। उन्होंने अन्य राष्ट्रों के साथ गठजोड़ किए, दूसरों के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार किया, अपने जवानों को मूर्खतापूर्ण युद्ध लड़ने को विवश किया, और यरूशलेम तक में मूर्तिपूजा को प्रोत्साहित किया। और जब होशे ने इन बातों को देखा तो परमेश्वर ने उसके सामने प्रकट किया कि यहूदा के लोग भी अपने घुटनों पर आ जाएँगे।

मोटे तौर पर कहें तो, हम उन विपत्तियों को देख सकते हैं जिनकी भविष्यवाणी होशे ने "अश्शूर के दंड" की अवधि के रूप में की थी। इस समय के दौरान परमेश्वर के दंड का मुख्य माध्यम अश्शूर साम्राज्य था। बाइबल के इतिहास में अश्शूर यह भूमिका तब निभाने लगा जब महान सम्राट तिग्लत्पिलेसेर तृतीय 744 ईसा पूर्व में सिंहासन पर बैठा। और किसी न किसी रूप में, जब तक अश्शूर की राजधानी निनवे 612 ईसा पूर्व में बेबिलोनी लोगों के अधिकार में नहीं आ गया, तब तक अश्शूर परमेश्वर के लोगों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटक बना रहा।

> यारोबाम द्वितीय के शासनकाल के अंत के निकट या उसके ठीक बाद तिग्लत्पिलेसेर तृतीय अश्शूर का राजा बना। अब उन दिनों में अश्शूर एक महाशक्ति था जो यहूदा, इस्राएल और अराम के अस्तित्व के लिए खतरा बन रहा था जो इस्राएल की उत्तरी दिशा में था। और इसलिए होशे की वे भविष्यवाणियाँ जिन्होंने इस्राएल की अनाज्ञाकारिता के कारण शापों और उसके बंधुआई में जाने की बात कही थी, उनका पूरा करनेवाला तिग्लत्पिलेसेर तृतीय था। और तिग्लत्पिलेसेर तृतीय के बाद शल्मनेसेर अगला राजा था, और ये दो लोग तिग्लत्पिलेसेर तृतीय तथा शल्मनेसेर परमेश्वर के दंड की छड़ी बन गए जिनमें, या जिनके द्वारा, उसने होशे की पुस्तक में की गई अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार इस्राएल को दंडित किया।
>
> — डॉ. लैरी ट्रोटर

जैसा कि हम इस अध्याय में देखेंगे, होशे की पुस्तक की विषय-वस्तु उसकी भविष्यवाणिय सेवकाई उन तीन मुख्य घटनाओं पर आधारित है जो अश्शूर के माध्यम से दंडित किए जाने के समय घटी थीं। होशे की पुस्तक की सबसे आरंभिक भविष्यवाणियाँ पहली घटना के विषय में हैं : अश्शूर का शक्तिशाली बन जाना जब तिग्लत्पिलेसेर तृतीय 744 ईसा पूर्व में राजा बना। होशे ने 732 ईसा पूर्व में इस्राएल पर अश्शूर के आक्रमण की भविष्यवाणियाँ भी की थीं। और इससे बढ़कर, होशे ने 722 ईसा पूर्व में दस वर्षों बाद इस्राएल पर अश्शूर के आक्रमण की भविष्यवाणियों को भी शामिल किया जब अश्शूर ने इस्राएल के राज्य को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। आइए उन परिस्थितियों को विस्तार से देखें जिनका सामना होशे ने तब किया जब उसने इन तीनों घटनाओं के विषय में भविष्यवाणी की। हम होशे की सेवकाई के पहले चरण के साथ आरंभ करेंगे जब उसने 744 ईसा पूर्व में अश्शूर के शक्तिशाली बनने के विषय में भविष्यवाणियों को प्राप्त किया था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

जैसा कि हमने अभी कहा, 744 ईसा पूर्व वह वर्ष था जिसमें तिग्लत्पिलेसेर तृतीय अश्शूर का राजा बना और इस्राएल तथा यहूदा पर अधिकार कर लिया। होशे इस समय से पहले इस्राएल के उत्तरी राज्य में रहता था, और उसने देखा था कि किस प्रकार राजा यारोबाम द्वितीय इस्राएल को संपन्नता की पराकाष्ठा तक ले गया था। पर उसने यह भी देखा था कि किस प्रकार राजा, याजक और अन्य अगुवे मूर्तिपूजा और अन्याय को बढ़ावा देने के द्वारा परमेश्वर के प्रति विश्वासघाती बन गए थे। और इसके फलस्वरूप, होशे ने परमेश्वर की ओर से उन शापों की चेतावनी दी जो अश्शूर के साम्राज्य के माध्यम से आएँगे।

इसी समय के दौरान, राजाओं और इतिहास की पुस्तक के अनुसार यहूदा का राज्य भी तिग्लत्पिलेसेर तृतीय के शासन के अधीन आ गया। परंतु इस्राएल के अगुवों के विपरीत यहूदा के राजा उज्जियाह ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण रूप में एक धर्मी राजा के समान राज्य किया। जब यहूदा में बहुत से लोग मूर्तिपूजा में लिप्त थे, उज्जियाह ने स्वयं केवल यहोवा की आराधना की और यरूशलेम के मंदिर में केवल यहोवा की आराधना को बढ़ावा दिया। इसलिए जितना हम जानते हैं, परमेश्वर ने इस समय के दौरान होशे के समक्ष यहूदा के विरुद्ध कोई दोष प्रकट नहीं किए और यहूदा के विरुद्ध शापों की कोई चेतावनियाँ नहीं दीं।

होशे की सेवकाई के अगले चरण ने 732 ईसा पूर्व में इस्राएल पर अश्शूर के आक्रमण पर ध्यान केंद्रित किया। जब होशे ने इस आक्रमण के विषय में अपनी पहले की भविष्यवाणियाँ प्रदान कीं, तब भी तिग्लत्पिलेसेर तृतीय ने इस्राएल के राज्य पर अपना राजनैतिक नियंत्रण जारी रखा था। राजा मनहेम और पकह्याह ने मूर्तिपूजा और अन्याय को बढ़ाया तथा वे सुरक्षा के लिए अश्शूर के साथ अपने गठजोड़ पर निर्भर रहे। अब प्राचीन समयों की अधिकांश राजनैतिक संधियों के समान इस संबंध में भी उनके अश्शूरी स्वामियों के देवताओं को मानना भी शामिल था। और परमेश्वर के प्रति इन विश्वासघातों के फलस्वरूप होशे ने चेतावनी दी कि परमेश्वर 732 ईसा पूर्व के आगामी अश्शूरी आक्रमण के द्वारा इस्राएल पर शापों को उंडेलेगा।

राजाओं की पुस्तक हमें बताती है कि इस समय उज्जियाह और उसके पुत्र योताम ने धर्मी राजाओं के रूप में यहूदा पर राज्य किया था। बहुत से लोगों ने ऊँचे स्थानों से अन्य देवताओं की आराधना करना जारी रखा, परंतु उज्जियाह और योताम ने न तो मूर्तिपूजा की और न ही इसका समर्थन किया। अतः इस समय के दौरान भी होशे ने यहूदा के विरुद्ध शापों की कोई चेतावनी नहीं दी।

अब, जब होशे ने 732 ईसा पूर्व में होने वाले अश्शूर के आक्रमण के बारे में बाद की भविष्यवाणियाँ प्राप्त कीं, तब इस्राएल की परिस्थितियाँ और अधिक बिगड़ गई थीं। राजा पेकह ने मूर्तिपूजा और अन्याय करना जारी रखा। उसने अश्शूरी प्रभाव के सामने समर्पण कर दिया, परंतु जब तिग्लत्पिलेसेर तृतीय किसी अन्य स्थान पर परेशानियों में घिरा हुआ था तो पेकह ने अश्शूर को भारी कर चुकाने से स्वयं को मुक्त करने का प्रयास किया। उसने अराम और अराम के देवताओं के साथ गठजोड़ किया — ऐसा गठजोड़ जिसे अक्सर “अरामी-इस्राएली गठजोड़” कहा जाता है। और पेकह तथा उसके अरामी समकक्ष ने इस उद्देश्य के साथ यहूदा पर आक्रमण किया कि वे अश्शूर के विरुद्ध अपने विद्रोह में यहूदा को शामिल होने के लिए मजबूर करें। जैसे कि आप कल्पना कर सकते हैं, होशे ने भविष्यवाणी की कि परमेश्वर इस विद्रोह के कारण इस्राएल के विरुद्ध शाप लेकर आएगा। और कुछ ही समय के बाद 732 ईसा पूर्व में तिग्लत्पिलेसेर तृतीय ने अराम के राज्य को नष्ट कर दिया और इस्राएल के राज्य को अपने वश में कर लिया।

दुखद रूप से, जैसे-जैसे आक्रमण का समय निकट आया, यहूदा में एक महत्वपूर्ण बदलाव हुआ। अरामी-इस्राएली गठजोड़ द्वारा यहूदा पर आक्रमण से ठीक पहले आहाज राज्य करने लगा। अपने दादा और पिता के विपरीत आहाज ने परमेश्वर को ठुकरा दिया और मूर्तिपूजा तथा अन्याय को बढ़ावा दिया। यहूदा ने अरामी-इस्राएली गठजोड़ तथा एदोमी और फिलिस्तीनियों के आक्रमणों को सहा। परंतु सहायता

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

के लिए यहोवा की ओर मुड़ने की अपेक्षा आहाज ने अश्शूरियों और उनके देवताओं के प्रति यहूदा के समर्पण की फिर से पुष्टि करने के द्वारा सुरक्षा प्राप्त करने का प्रयास किया। और परमेश्वर के विरुद्ध आहाज के विद्रोह के कारण होशे ने भविष्यवाणी की कि परमेश्वर के शाप यहूदा के विरुद्ध भी आने वाले हैं।

यह हमें होशे की सेवकाई के उस समय की ओर लेकर आता है जब उसने 722 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण के बारे में भविष्यवाणी की थी — अर्थात् उस आक्रमण के बारे में जिसने इस्राएल की राजधानी शोमरोन के पतन तथा इस्राएल के अधिकांश लोगों के निर्वासन की ओर अग्रसर किया। 722 ईसा पूर्व के विषय में होशे की पहले की भविष्यवाणियों ने उस राजा होशे के आरंभिक शासनकाल के दौरान इस्राएल में हुई घटनाओं पर ध्यान दिया, जिसे अश्शूर ने इस्राएल के सिंहासन पर बैठा दिया था। राजा होशे ने इस्राएल में मूर्तिपूजा और अन्याय को बढ़ावा दिया तथा कुछ समय के लिए अश्शूरियों और उनके देवताओं के साथ अपने गठजोड़ के प्रति विश्वासयोग्य रहा। इसके प्रत्युत्तर में होशे ने चेतावनी दी कि दूसरे मुख्य अश्शूरी आक्रमण, जो 722 ईसा पूर्व में हुआ, के माध्यम से इस्राएल पर नए शाप आ रहे थे।

उसी दौरान यहूदा में आहाज ने मूर्तिपूजा और अन्याय को बढ़ाने के द्वारा परमेश्वर की वाचा का उल्लंघन करना जारी रखा। उसने फिर भी यहोवा पर निर्भर रहने से इनकार कर दिया, और अश्शूर तथा अश्शूर के देवताओं के साथ अपनी संधि पर भरोसा करने के द्वारा अपने शत्रुओं से सुरक्षा पाने का प्रयास किया। और फलस्वरूप, होशे ने फिर से चेतावनी दी कि परमेश्वर की ओर से बड़े शाप यहूदा के विरुद्ध आ रहे थे।

722 ईसा पूर्व में अश्शूरी आक्रमण के बारे में होशे की बाद की भविष्यवाणियाँ राजा होशे द्वारा इस्राएल में मूर्तिपूजा और अन्याय को बढ़ावा देने पर केंद्रित रहीं। अब, जब तिग्लत्पिलेसेर तृतीय की मृत्यु हुई तो राजा होशे ने अश्शूर को कर देने से मुक्त होने का अवसर देखा। परंतु सुरक्षा के लिए परमेश्वर की ओर मुड़ने की अपेक्षा उसने मिस्र और मिस्र के देवताओं के साथ गठजोड़ किया। होशे ने भविष्यवाणी की कि इन पापों के कारण परमेश्वर शीघ्र ही उन पर शाप भेजेगा। और इन भविष्यवाणियों की पूर्णता में तिग्लत्पिलेसेर के पुत्र शल्मनेसेर पंचम ने शोमरोन पर अधिकार कर लिया और राजा होशे को भारी कर अदा करने के लिए मजबूर किया। कुछ ही वर्षों बाद 722 ईसा पूर्व में अश्शूरी राजा सर्गोन द्वितीय ने शोमरोन को पूरी तरह से नष्ट कर दिया तथा इस्राएल के अधिकांश लोगों को निर्वासन में भेज दिया।

इन वर्षों के दौरान राजा आहाज और हिजकिय्याह सह-शासक थे। पहले पहल, हिजकिय्याह ने अश्शूर और उसके देवताओं के साथ अपने पिता की संधि को जारी रखा। परंतु जल्द ही वह अश्शूर से अलग हो गया। दुखद रूप से, हिजकिय्याह अश्शूर के विरुद्ध सुरक्षा के लिए यहोवा पर भरोसा रखने की अपेक्षा अपनी सेना, अपने गढ़वाले नगरों और मिस्र के साथ अपने गठजोड़ पर निर्भर रहा। और इसके परिणामस्वरूप, होशे ने एक बार फिर से चेतावनी दी कि परमेश्वर यहूदा पर शाप लेकर आएगा, वे शाप जो कई वर्षों के बाद अश्शूर के आक्रमण के माध्यम से आए।

यदि आपने बाइबल के इतिहास की इस अवधि का अध्ययन करने में बहुत समय नहीं बिताया है, तो इन सारे नामों और तिथियों के कारण उलझन में पड़ जाना सरल है। परंतु यह जान लेना कि ये घटनाएँ होशे की सेवकाई के दौरान हुईं, होशे की पुस्तक को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं। अतः चाहे यह कितना भी मुश्किल हो, 744 ईसा पूर्व में अश्शूर के शक्तिशाली बनने के विषय में होशे की भविष्यवाणियों को 732 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण, और साथ ही 722 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण की भविष्यवाणियों से अलग करके देखना महत्वपूर्ण है। जब हम इन भिन्नताओं को करते हैं, तो हम यह देख पाएँगे कि कैसे होशे ने सेवकाई के दशकों को उन चुनौतियों को संबोधित करते हुए बिताया जिनका सामना परमेश्वर के लोगों ने इन सब समयों में किया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

भविष्यवक्ता होशे की सेवकाई से संबंधित समय, स्थान और बदलती परिस्थितियों का अध्ययन कर लेने के बाद, अब हमें होशे के उद्देश्य पर विचार-विमर्श करना चाहिए। भविष्यवक्ता के रूप में परमेश्वर के प्रकाशनों की घोषणा करने के द्वारा उसने किस कार्य को पूरा करने का प्रयास किया?

उद्देश्य

हमने इस प्रश्न को एक अन्य श्रृंखला में और अधिक विवरण के साथ देखा है, परंतु सामान्य रूपों में परमेश्वर ने होशे को पृथ्वी की छोर तक परमेश्वर के राज्य को फ़ैलाने में उसके कार्य को करने के लिए वैसे ही बुलाया जैसे वह हर युग में अपने सब लोगों को बुलाता है। और जैसे कि होशे को पता था, परमेश्वर ने अपनी वाचाओं में स्थापित अपनी नीतियों के द्वारा अपने राज्य को फ़ैलाने का कार्य किया। होशे को यह भली-भांति पता था कि परमेश्वर ने इन पांच मुख्य वाचाओं में अपनी राज्य-संबंधी नीतियों को अभिपुष्ट किया था, जिसकी शुरुआत आदम और हव्वा में सब राष्ट्रों के साथ हुई, और फिर अब्राहम, मूसा और दाऊद के साथ विशेष वाचाओं में। इनमें से प्रत्येक वाचा में विशेष बल दिए गए थे, परंतु आगे आने वाली प्रत्येक वाचा ने पिछली वाचाओं की नीतियों को शामिल किया और उन पर निर्भर हुई। दूसरे *भविष्यवक्ताओं* के समान होशे के पास परमेश्वर के राजदूत के रूप में सेवा करने की विशेष भूमिका थी जिसने घोषणा की कि कैसे परमेश्वर इन राज्य-संबंधी नीतियों को लागू करेगा।

परमेश्वर की सभी वाचाओं ने अपने लोगों के साथ परमेश्वर के वार्तालापों के तीन मूलभूत घटकों को स्थापित किया जिन्होंने होशे की सेवकाई की रूपरेखा को आकार दिया। यहाँ हमारे उद्देश्यों के लिए हम संक्षिप्त विवरण को प्रदान करेंगे। पहला, किसी न किसी रूप में परमेश्वर की सब वाचाओं का आरंभ तथा उनका अस्तित्व ईश्वरीय भलाई, या परमेश्वर की अच्छाई तथा दयालुता के द्वारा हुआ था। दूसरा, परमेश्वर की सभी वाचाओं ने मानवीय विश्वासयोग्यताओं के उन प्रकारों को स्पष्ट किया जिनकी मांग परमेश्वर ने अपनी भलाई के धन्यवादी प्रत्युत्तर के रूप में अपने लोगों से की थी। और तीसरा, इन सब ईश्वरीय वाचाओं में ऐसे दो परिणाम जुड़े होते थे जिनकी अपेक्षा उसके लोगों को करनी चाहिए : आज्ञाकारिता के लिए आशीष और अनाज्ञाकारिता के लिए शाप।

> अतः परमेश्वर चाहता था कि इस्राएली उसके साथ की गई वाचा में विश्वासयोग्य बने रहें। और उसने प्रतिज्ञा की कि यदि वे परमेश्वर के साथ की गई वाचा में विश्वासयोग्य रहते हैं तो उनके साथ सब कुछ अच्छा ही होगा। परंतु यदि वे उसकी वाचा का उल्लंघन करते हैं, तो उनके साथ कुछ गलत होगा। यह बात हमारे जीवनों में भी लागू होती है। यदि हम परमेश्वर की वाचा के प्रति विश्वासयोग्य रहते हैं, तो परमेश्वर हमारे साथ रहेगा, हमारी अगुवाई करेगा, और हमारे भीतर कार्य करना निरंतर जारी रखेगा।
>
> — पास्टर मीका न्गूसा

परमेश्वर की वाचाओं के भविष्यवाणिय राजदूत होने के नाते होशे ने इस विषय में प्रकाशन प्राप्त किए कि कैसे परमेश्वर ने वाचा के इन घटकों को निर्देशित करने का मन बनाया था। तब उसने ये प्रकाशन लोगों को प्रदान किए। यदि हम होशे को उन घटनाओं के आधार पर देखें जो उसकी सेवकाई के वर्षों में हुए तो हम उसके भविष्यवाणिय उद्देश्य को इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं : होशे का उद्देश्य इस बात की घोषणा करना था कि कैसे परमेश्वर 744 ईसा पूर्व में अश्शूर के शक्तिशाली बनने, 732 ईसा पूर्व के अश्शूर के आक्रमण, और 722 ईसा पूर्व के अश्शूर के आक्रमण के संबंध में ईश्वरीय भलाई के वाचाई घटकों, मानवीय विश्वासयोग्यता और आशीष तथा शापों के परिणामों को लागू करना चाहता था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

अब जबकि हमने *भविष्यवक्ता* होशे की पृष्ठभूमि का अध्ययन कर लिया है, इसलिए हम होशे की *पुस्तक* की पृष्ठभूमि को देखने के लिए तैयार हैं।

होशे की पुस्तक

पूरी संभावना है कि होशे और उसके चेलों ने उसकी सेवकाई के दशकों के दौरान उसकी भविष्यवाणी को लिखा हो। परंतु हिजकिय्याह के शासनकाल के दौरान उसके जीवन के अंत के निकट पहुंचकर ही अंततः होशे ने अपनी भविष्यवाणियों को इकट्ठा किया और उन्हें एक पुस्तक के रूप में संकलित किया जिसे हम अब होशे की पुस्तक कहते हैं। जब हम यह दृष्टिकोण रखते हैं तो हमें पुस्तक में ही बहुत सी अंतर्दृष्टियाँ मिल जाती हैं।

अब तक हमने उस बात पर ध्यान केंद्रित किया है जिसे हमने "वह संसार" कहा — अर्थात् अश्शूर के द्वारा आए दंड के विभिन्न समय जब होशे ने इस्राएल और यहूदा दोनों के लिए परमेश्वर की ओर से प्रकाशनों को प्राप्त किया। अब हम "उनके संसार" की ओर मुड़ेंगे — अर्थात् उस समय की ओर जब होशे ने होशे की पुस्तक के रूप में इन भविष्यवाणियों को चुना और संकलित किया ताकि वह यहूदा के अगुवों को इस विषय में बुद्धि की बातें बता सके कि आगे क्या होने वाला है।

उस संसार और उनके संसार के बीच यह भिन्नता होशे की पुस्तक को समझने के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि होशे ने इस पुस्तक की रचना 722 ईसा पूर्व में इस्राएल के राज्य के नष्ट किए जाने के *बाद* की थी। अतः यद्यपि होशे की पुस्तक में उत्तरी इस्राएल के बचे हुए लोगों के लिए महत्वपूर्ण भावार्थ थे, परंतु उसने इसे प्राथमिक रूप से यहूदा के अगुवों के लिए लिखा था। जैसा कि हम देखेंगे, होशे ने अपनी पूरी सेवकाई के दौरान की गई भविष्यवाणियों को लिखा है ताकि वह हिजकिय्याह और यहूदा के अन्य अगुवों को अनुसरण करने के लिए बुद्धि का एक मार्ग बता सके जब उन्होंने 701 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण का सामना किया।

यह देखने के लिए कि यह कैसे सत्य है, हम अपनी पूर्व की चर्चा पर ध्यान देंगे और होशे की पुस्तक की पृष्ठभूमि की चार विशेषताओं को देखेंगे : इसकी रचना का समय, स्थान जहाँ यह लिखी गई थी, इसके लिखे जाने के इर्द-गिर्द की परिस्थितियाँ, और पुस्तक का उद्देश्य। आइए उस समय के साथ आरंभ करें जब हमारी पुस्तक लिखी गई थी।

समय

शुरू में ही, हमें यह उल्लेख करना चाहिए कि आलोचनात्मक विद्वान सामान्यतः यह मानते हैं कि होशे की पुस्तक कई मुख्य संपादनों से होकर गई जिनकी समाप्ति बहुत बाद में हुई — या तो बेबीलोन के निर्वासन में या फिर बेबीलोन के निर्वासन के भी बाद में। परिणामस्वरूप, अधिकांश आलोचनात्मक व्याख्याकार मानते हैं कि हमारी पुस्तक के कुछ ही भाग स्वयं होशे के द्वारा लिखे गए हैं। इसकी अपेक्षा, वे तर्क देते हैं कि संपादकों ने होशे की मृत्यु के काफ़ी बाद आपनी सामग्री को पुस्तक में जोड़ दिया। परंतु हमें याद रखना है कि आलोचनात्मक व्याख्याकार अक्सर इसलिए ये निष्कर्ष निकालते हैं क्योंकि वे इस बात का इनकार करते हैं कि होशे ने भविष्य के बारे में परमेश्वर से अलौकिक प्रकाशनों को प्राप्त किया था।

इसके विपरीत, सुसमाचारिक लोग होशे की भविष्यवाणी की अलौकिक प्रेरणा पर विश्वास करते हैं। अतः हम अभिपुष्ट करते हैं कि होशे की संपूर्ण पुस्तक वास्तव में उन बातों को दर्शाती है जो स्वयं होशे ने परमेश्वर से प्राप्त की थीं। और इसी कारण सुसमाचारिक लोग इस पुस्तक के लिखे जाने के काफ़ी पहले के समय को स्वीकार करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

एक सुसमाचारिक दृष्टिकोण के अनुसार पद 1:1 जब यहूदा के राजा हिजकिय्याह का उल्लेख करता है तो यह हमारी पुस्तक की रचना के पहले के संभावित समय को स्थापित करता है। यह स्पष्ट है कि हिजकिय्याह यदि हमारी इस पुस्तक के लिखे जाने के समय तक राजा नहीं बना होता तो उसे राजाओं की सूची में शामिल नहीं किया गया होता। अतः यह कहना सुरक्षित है कि होशे की पुस्तक की रचना का आरंभिक संभावित समय हिजकिय्याह के अकेले शासन के दौरान कहीं था जो 715 ईसा पूर्व में आरंभ हुआ और 686 ईसा पूर्व में समाप्त हुआ।

> हम इस बात के प्रति निश्चित नहीं हो सकते कि होशे ने कब अंततः इस पुस्तक की रचना की, या इसे इस अंतिम रूप में लेकर आया जो अब हम बाइबल में पाते हैं। परंतु होशे के जीवन के अंत के निकट होशे के जीवन में एक घटना है, उस अंतिम राजा के शासनकाल में हैं जिसके अधीन उसने सेवा की थी, और उस राजा का नाम हिजकिय्याह था... अब हिजकिय्याह कई तरह की बातों के लिए जाना जाता है, परंतु बाइबल के इतिहास में शायद सबसे महत्वपूर्ण या उल्लेखनीय बात जिसका उसने अनुभव किया, वह अश्शूरी सन्हेरीब का आक्रमण था। सन्हेरीब ने यहूदा को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। लोग अपना जीवन बचाने के लिए भागे, और आप इसे मीका 1 में पढ़ सकते हैं, वह विनाश जो उसने यहूदा के प्रदेश में किया था। परंतु वह उससे भी आगे बढ़ा। उसने वास्तव में यरूशलेम को घेरकर घेराबंदी की... यहूदा और यरूशलेम के आस-पास के क्षेत्रों में सन्हेरीब का आक्रमण, परमेश्वर के नगर, दाऊद के नगर, जगत की राजधानी को घेर लेना इतना महत्वपूर्ण था कि यह उस समय यहूदा के इतिहास में सब बातों को एक चरम बिंदु पर ले आया। सब कुछ दांव पर था। क्या यरूशलेम का पतन होने वाला था? यशायाह ने उसी समय के दौरान भविष्यवाणी की थी, और होशे ने भी शायद उसी समय अपनी पुस्तक लिखी, क्योंकि होशे की पुस्तक के पहले ही पद, 1:1 में जिस अंतिम राजा का उल्लेख है, वह है हिजकिय्याह।
>
> — डॉ. रिचर्ड, एल. प्रैट, जूनियर

हम इस रचना के अंतिम रूप दिए जाने के संभावित नवीनतम समय को होशे की मृत्यु से पहले, हिजकिय्याह के शासनकाल के लगभग अंत के निकट भी स्थापित कर सकते हैं। अब आलोचनात्मक व्याख्याकार यह दर्शाने में सही हैं कि होशे ने अपनी पुस्तक को लिखने में शायद अपने चेलों को लगाया हो। यहाँ-वहाँ कुछ स्थानों पर हम ऐसे प्रमाण देखते हैं कि होशे अपने चेलों पर निर्भर रहा, लगभग वैसे ही जैसे यिर्मयाह, यिर्मयाह 36:4 में, अपने चेले बारूक पर निर्भर रहा था।

उदाहरण के लिए सोचें कि होशे 1:2-9 जीवनकथात्मक है। यह अन्य पुरुष में होशे के कार्यों का वर्णन करता है : "*होशे* ने यहाँ कहा।" "*उसने* वह किया।" परंतु 3:1-3 *आत्म*-कथात्मक है। होशे के कार्यों का वर्णन प्रथम पुरुष में किया गया है : "*मैंने* यह किया।" "यहोवा ने *मुझसे* कहा।" जीवनकथा से आत्मजीवनकथा में यह परिवर्तन शायद इस बात को बताता है कि होशे के चेले इस पुस्तक की रचना में शामिल थे।

परंतु आलोचनात्मक व्याख्याकारों की कल्पना के विपरीत पवित्रशास्त्र में ऐसा कोई सकारात्मक प्रमाण नहीं है कि चेलों ने होशे के शब्दों को संपादित किया हो या उसकी मृत्यु के बाद नई सामग्री को उसमें जोड़ा हो। और यदि होशे के चेलों ने वास्तव में होशे की मृत्यु के बाद उसकी पुस्तक को पूरा किया भी हो, तो भी वे उन प्रकाशनों से नहीं भटके जो परमेश्वर ने वास्तव में होशे को दिए थे। पद 1:1 में दिया

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

गया पुस्तक का शीर्षक स्पष्ट रूप से कहता है कि इस पूरी पुस्तक में पाया जानेवाला "यहोवा का वचन बेरी के पुत्र होशे के पास पहुँचा।"

इन्हीं कारणों से हम उचित रीति से इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि हमारी इस पुस्तक की रचना हिजकिय्याह के शासनकाल के दौरान हुई थी। और इसका अर्थ है कि होशे की पुस्तक संभवतया 686 ईसा पूर्व से पहले लिखी जा चुकी थी, यह वह समय था जब तक होशे की निश्चित रूप से मृत्यु हो गई थी।

होशे की पुस्तक के लिखे जाने की समयावधि के इस दायरे को स्थापित करने के साथ-साथ हमें उस स्थान को भी सटीकता से बताना चाहिए जहाँ यह लिखी गई थी।

स्थान

जैसे कि हम उल्लेख कर चुके हैं, यह संभव है कि होशे यारोबाम द्वितीय के शासनकाल के लगभग अंत के निकट यहूदा में बसने को चला गया था। और यह जानते हुए कि वह 722 ईसा पूर्व में इस्राएल के पतन के बाद हिजकिय्याह के शासनकाल में रहा था, हम आश्वस्त हो सकते हैं कि होशे ने इस पुस्तक की रचना यहूदा में की थी।

होशे की पुस्तक स्वयं पद 1:1 में इसे स्वीकार करती है। यह पद इस्राएल राज्य के यारोबाम द्वितीय का नाम बताने से पहले, यहूदा के राजा उज्जियाह, योताम, आहाज, और हिजकिय्याह के नामों का उल्लेख करता है। यहूदा के राजाओं का उल्लेख पहले करने के द्वारा होशे ने जानबूझकर यह स्वीकार किया कि उसने अपनी पुस्तक यहूदा में दाऊद के राजवंश के अधिकार के अधीन लिखी। इसलिए, यद्यपि होशे की भविष्यवाणियाँ मुख्य रूप से इस्राएल के उत्तरी राज्य पर केंद्रित हैं, फिर भी होशे ने अपनी *पुस्तक* को यहूदा के दक्षिणी राज्य में *लिखा।*

अब जबकि हमने होशे की पुस्तक की रचना के समय और स्थान के विषय में अध्ययन कर लिया है, इसलिए आइए हम होशे और यहूदा के उन लोगों के द्वारा सामना की जानेवाली परिस्थितियों की ओर मुड़ें जिन्होंने सबसे पहले इस पुस्तक को प्राप्त किया था।

परिस्थितियाँ

जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया था, जब होशे ने अपनी पुस्तक की रचना की तो यहूदा के राज्य के रूप में उसका नया गृहक्षेत्र अश्शूर की ओर से मिली धमकियों का सामना कर रहा था। 701 ईसा पूर्व में हिजकिय्याह के शासन के दौरान अश्शूर के राजा सन्हेरीब ने यहूदा पर आक्रमण कर दिया। इसलिए, यद्यपि होशे की अधिकांश भविष्यवाणियाँ उत्तरी इस्राएल के विरुद्ध अश्शूर के माध्यम से आए दंड के विषय में थीं, फिर भी होशे ने अपनी *पुस्तक* को यहूदा की अगुवाई के लिए समर्पित किया जब उन पर अश्शूर के माध्यम से दंड आया। इस कारण, हमें सन्हेरीब के आक्रमण के इर्द-गिर्द की घटनाओं से परिचित होना जरूरी है।

राजाओं और इतिहास की पुस्तकों के विवरण, और साथ ही साथ मीका और यशायाह की भविष्यवाणियाँ हिजकिय्याह के शासनकाल के एक जटिल चित्र की रचना करती हैं। आरंभ से ही, हिजकिय्याह ने यहूदा में कई सुधार किए और यहूदा को दृढ़ किया, इसलिए जब अश्शूर का नया राजा सन्हेरीब राजगद्दी पर बैठा तो उसने उसे कर देने से इनकार कर दिया। परंतु जब अश्शूर के प्रतिशोध का खतरा बढ़ता गया, तो हिजकिय्याह परमेश्वर पर निर्भर होने से चूक गया। इसकी अपेक्षा उसने मिस्र और मिस्र के देवताओं के साथ गठजोड़ करने के द्वारा सुरक्षा पाने का प्रयास किया। परंतु उसके प्रयास व्यर्थ साबित हुए। सन्हेरीब ने यहूदा पर आक्रमण किया और उसके कई नगरों, कस्बों और गाँवों को उजाड़ दिया, और यहाँ तक कि यरूशलेम को भी घेर लिया। परंतु जब यह प्रतीत हुआ कि यरूशलेम का पतन हो

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

जाएगा, हिजकिय्याह ने यहोवा से प्रार्थना की, और भविष्यवक्ता यशायाह ने उसे परमेश्वर की ओर से छुटकारे का आश्वासन दिया। जैसा कि हम 2 राजाओं 19:33-34 में पढ़ते हैं :

> जिस मार्ग से वह [सन्हेरीब] आया, उसी से वह लौट भी जाएगा, और इस नगर में प्रवेश न करने पाएगा, यहोवा की यही वाणी है। और मैं अपने निमित्त और अपने दास दाऊद के निमित्त इस नगर की रक्षा करके इसे बचाऊँगा (2 राजाओं 19:33-34)।

परमेश्वर की दया से यशायाह की यह भविष्यवाणी पूरी हुई। परमेश्वर ने चमत्कारिक रूप से यरूशलेम को सन्हेरीब के हाथों से बचाया।

> इस्राएल के इतिहास में घटी एक सबसे महत्वपूर्ण घटना वह थी जब अश्शूर का राजा सन्हेरीब यहूदा के राजा हिजकिय्याह को हराने के लिए आया... वह यहूदा के विरुद्ध आता है, और वह यहूदा के लगभग सभी नगरों को अपने अधीन कर लेता है। वास्तव में एक नगर बच जाता है, और वह है यरूशलेम। और वह मूल रूप से यह कहता है, "तुम्हारा परमेश्वर तो दूसरे देवताओं जैसा ही है। मैं इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को भी वैसे ही खदेड़ दूँगा जैसे मैंने दूसरे देवताओं को खदेड़ा है।" वह स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध बड़े अहंकार के साथ बोलता है, और फिर परमेश्वर कहता है, "मैं सन्हेरीब को अपनी सामर्थ्य दिखाऊँगा।" और इसलिए वह अलौकिक रूप से इस्राएल को छुड़ाता है, और अश्शूरी सेना का वध कर डालता है जिसमें एक लाख पिचयासी हज़ार अश्शूरी सैनिक मारे जाते हैं। उसने शायद अपने देश में चल रहे किसी विद्रोह का समाचार सुना, और उसे वापस अश्शूर को लौटना पड़ा। और अश्शूरियों के उद्घोषों से भी हम जानते हैं कि उन्होंने हिजकिय्याह को पिंजरे में बंद करने की बात की, परंतु उन्होंने कभी नहीं कहा कि उन्होंने उसे पराजित किया। अब याद रखें, अश्शूरी साहित्य में यह पूरा दुष्प्रचार है। उन्होंने कभी हार को स्वीकार नहीं किया, इसलिए केवल यह कहकर कि उन्होंने उसे एक पक्षी की तरह पिंजरे में बंद कर लिया, वास्तव में यह स्वीकार किया है कि उन्होंने उसे पराजित नहीं किया। अतः अश्शूरी दस्तावेज़ों में वे इसे स्वीकार करते हैं।
>
> — डॉ. रसेल टी. फूलर

इस बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना कठिन होगा कि यरूशलेम के छुटकारे ने यहूदा के राज्य के प्रति परमेश्वर के कितने बड़े अनुग्रह को प्रकट किया। परंतु यह चाहे जितना भी अद्भुत हो, हिजकिय्याह की परेशानियाँ समाप्त नहीं हुईं। सन्हेरीब के घर लौटने पर हिजकिय्याह अब भी अश्शूर की ओर से और अधिक आक्रमण से डरा हुआ था। दुखद रूप से, परमेश्वर पर निर्भर रहने की अपेक्षा हिजकिय्याह अपने पुराने मार्गों पर चला और एक अन्य गठजोड़ का प्रयास किया, मिस्र के साथ नहीं बल्कि शक्तिशाली हो रहे बेबीलोन के राज्य के साथ। यरूशलेम के बड़े छुटकारे के बाद परमेश्वर पर भरोसा रखने के हिजकिय्याह के इनकार ने परमेश्वर के प्रति एक बड़े विश्वासघात को प्रकट किया। और भविष्यवक्ता यशायाह ने तुरंत चेतावनी दी कि यहूदा का राजकीय खजाना बेबीलोन के द्वारा लूट लिया जाएगा। 2 राजाओं 20:17-18 में यशायाह के वचनों को सुनिए :

> ऐसे दिन आनेवाले हैं, जिनमें जो कुछ तेरे भवन में है, और जो कुछ तेरे पुरखाओं का रखा हुआ आज के दिन तक भण्डारों में है वह सब बेबीलोन को उठ जाएगा;

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> **यहोवा यह कहता है कि कोई वस्तु न बचेगी। और जो पुत्र तेरे वंश में उत्पन्न हों, उनमें से भी कुछ को वे बन्दी बनाकर ले जाएँगे; और वे खोजे बनकर बेबीलोन के राजभवन में रहेंगे (2 राजाओं 20:17-18)।**

दुःख की बात यह है कि जब हिजकिय्याह ने यशायाह से ये वचन सुने तो उसने परमेश्वर के प्रति अपने विश्वासघात से मन नहीं फिराया। बल्कि उसने बड़ी राहत के साथ प्रत्युत्तर दिया कि यहूदा के विरुद्ध यह दंड उसके समय के दौरान नहीं आएगा।

701 ईसा पूर्व में यरूशलेम के छुटकारे से पहले और बाद में परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने में हिजकिय्याह की विफलताएँ इतनी महत्वपूर्ण थीं कि उन्होंने होशे को अपनी पुस्तक की रचना करने के लिए प्रेरित किया। एक ओर, यह संभव है कि होशे ने सन्हेरीब से यरूशलेम के छुटकारे से पहले किसी समय अपनी पुस्तक को लिखा हो। सन्हेरीब के आक्रमणों और यरूशलेम के चारों ओर की गई उसकी घेराबंदी ने भविष्यवाणिय गतिविधि में एक हड़बड़ी को उत्पन्न किया। और इस बात की पूरी संभावना है कि परमेश्वर ने होशे को इस समय अपनी पुस्तक को लिखने के लिए बुलाया ताकि वह हिजकिय्याह की विफलताओं को संबोधित करे जब सन्हेरीब यरूशलेम की ओर आगे बढ़ा और उसे घेर लिया।

दूसरी ओर, यह भी संभव है कि होशे ने अपनी पुस्तक की रचना यरूशलेम के छुटकारे के ठीक बाद की हो। जैसा कि हमने उल्लेख किया था, यद्यपि परमेश्वर ने यरूशलेम को छुड़ाया था, पर फिर भी हिजकिय्याह परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बनने में विफल रहा, और बेबीलोन के साथ उसने गठजोड़ करने का प्रयास किया। और परमेश्वर के प्रति हिजकिय्याह के विश्वासघात ने यहूदा के भविष्य को खतरे में डाल दिया। अतः इस बात की पूरी संभावना है कि होशे ने यह पुस्तक सन्हेरीब से यरूशलेम के छुटकारे से पहले के संकट को या फिर उसके बाद के संकट को संबोधित करने के लिए लिखी।

होशे की पुस्तक की पूर्ण रचना के समय, स्थान और परिस्थितियों को मन में रखते हुए पुस्तक के व्यापक उद्देश्य को समझना कठिन नहीं है। खुशी की बात यह है कि हमें अटकलें लगाने की जरुरत नहीं, क्योंकि स्वयं होशे ने उस लक्ष्य को स्पष्ट रूप से प्रकट कर दिया जो उसके मन में था।

उद्देश्य

हमारी पुस्तक के अंतिम पद, होशे 14:9 में होशे ने इस रीति से अपने उद्देश्य को सारगर्भित किया :

> **जो बुद्धिमान हो, वही इन बातों को समझेगा; जो प्रवीण हो, वही इन्हें बूझ सकेगा; क्योंकि यहोवा के मार्ग सीधे हैं, और धर्मी उन में चलते रहेंगे, परन्तु अपराधी उन में ठोकर खाकर गिरेंगे (होशे 14:9)।**

यह पद इससे पहले के पदों से बिलकुल अलग है, और यह पूरी पुस्तक को उनके लिए अंतिम निर्देशों के साथ समाप्त करता है जिन्होंने इसे सबसे पहले प्राप्त किया था। होशे ने यहूदा के अपने मूल पाठकों को इस बात पर विश्वास करने के द्वारा कि “यहोवा के मार्ग सीधे हैं,” “बुद्धिमान" और “प्रवीण" बनने के लिए कहा। दूसरे शब्दों मे, होशे ने आशा की कि यहूदा भविष्यवाणियों के उसके संकलन के द्वारा बुद्धि को प्राप्त करेगा। वह चाहता था कि वे अपनी परिस्थितियों को इस सच्चाई के प्रकाश में देखें कि “धर्मी” — वे जो परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त करते हैं — यहोवा के मार्गों में चलते हैं। परंतु “अपराधी” — वे जो परमेश्वर के दंड को प्राप्त करते हैं — मूर्खतावश “उन में ठोकर खाकर गिरेंगे।”

यद्यपि इस्राएल की बुद्धि परंपराओं के अंश अन्य भविष्यवाणिय पुस्तकों के लेखनों में मिलते हैं, फिर भी बुद्धि के प्रति होशे की साहसिक बुलाहट असाधारण है। परंतु बुद्धि के प्रति होशे का ध्यान देना हिजकिय्याह के समय के साथ उपयुक्त बैठता है। पवित्रशास्त्र से हम जानते हैं कि हिजकिय्याह ने स्वयं

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

को ऐसे लोगों के साथ जोड़ा जो इस्राएल की बुद्धि की परंपराओं से भली-भांति परिचित थे। वास्तव में, नीतिवचन 25:1, नीतिवचन के 25–29 अध्यायों का परिचय "सुलैमान के नीतिवचन ये भी हैं; जिन्हें यहूदा के राजा हिजकिय्याह के जनों ने नकल की थी," के रूप में देता है। स्पष्ट रूप से, "हिजकिय्याह के जन" हिजकिय्याह के राज-दरबार से जुड़े बुद्धिमान पुरुषों का बहुत ही सम्माननीय समूह थे। और इस बात की काफ़ी संभावना है कि बुद्धि के लिए होशे की अंत की बुलाहट ने हिजकिय्याह और उसके राज-दरबार के बुद्धिमान पुरुषों से स्पष्ट रूप से बात की हो। इस प्रकाश में, हम होशे की पुस्तक के उद्देश्य को इस रीति से सारगर्भित कर सकते हैं :

> होशे की पुस्तक ने यहूदा के अगुवों को उससे बुद्धि प्राप्त करने की बुलाहट दी जो परमेश्वर ने होशे की संपूर्ण सेवकाई के दौरान प्रकट किया था, जब वे सन्हेरीब के आक्रमण की चुनौतियों का सामना कर रहे थे।

जैसे कि यह सारांश सुझाव देता है, हमारी पुस्तक की रचना मुख्य रूप से भविष्य की घटनाओं की सटीक भविष्यवाणी करने के लिए नहीं की गई थी। इसकी अपेक्षा, होशे ने अपनी पुस्तक की रचना यहूदा के अगुवों को यह बुलाहट देने के लिए की कि वे हिजकिय्याह के दिनों में बुद्धि के मार्ग का अनुसरण करें। हिजकिय्याह और उसके राज-दरबार को उससे सीखना था जो परमेश्वर ने होशे की पूरी सेवकाई के दौरान प्रकट किया था, और उन्हें सन्हेरीब के आक्रमण की चुनौतियों के बीच यहूदा की अगुवाई करनी थी। सन्हेरीब से यरूशलेम के छुटकारे से पहले और ठीक बाद के दोनों समयों में यहूदा के अगुवों को बुद्धि की शिक्षा की अत्यधिक आवश्यकता थी, और होशे की पुस्तक ने उन्हें यह प्रदान की।

होशे के हमारे परिचय में अब तक हमने भविष्यवक्ता होशे और उसकी पुस्तक की पृष्ठभूमि का अध्ययन कर लिया है। आइए अब हम होशे की पुस्तक की विषय-वस्तु और संरचना के संक्षिप्त विवरण की ओर मुड़ें।

विषय-वस्तु और संरचना

दुखद रूप से, बहुत से सुसमाचारिक मसीही उस ऐतिहासिक परिदृश्य की उपेक्षा करते प्रतीत होते हैं जिसमें होशे ने सबसे पहले अपनी भविष्यवाणियों को प्राप्त किया था। वे पुस्तक की छोटी-छोटी इकाइयों पर ध्यान देते भी प्रतीत होते हैं, जैसे कि वे एक दूसरे से अलग-अलग खड़ी हों। निश्चित रूप से, इन गैर-ऐतिहासिक और आण्विक दृष्टिकोणों ने होशे की पुस्तक में कई अंतर्दृष्टियों को प्रदान किया है। परंतु इन अंतर्दृष्टियों में और अधिक बातों को जोड़ने के लिए हम एक अलग रणनीति का अनुसरण करेंगे। हम देखेंगे कि होशे की सेवकाई के ऐतिहासिक परिदृश्य उसकी भविष्यवाणियों को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं। और छोटी-छोटी इकाइयों को एक दूसरे से अलग-अलग करके देखने की अपेक्षा हम होशे की पूरी पुस्तक की बड़ी इकाइयों के बीच के तार्किक संबंधों की खोज करेंगे। यह रणनीति हमें और अधिक स्पष्टता से यह देखने में सहायता करेगी कि कैसे होशे ने उन लोगों को बुद्धि प्रदान करने के लिए अपनी पुस्तक की रचना की जिन्होंने यहूदा में सबसे पहले इस पुस्तक को प्राप्त किया था। और यह हमें इस बात को देखने में भी सहायता करेगा कि कैसे हमें आज होशे की पुस्तक से सीखने की आवश्यकता है।

एक बार फिर से स्वयं को होशे के स्थान पर रखें। कुछ अन्य भविष्यवक्ताओं के विपरीत जिनकी सेवकाइयाँ अपेक्षाकृत छोटी थीं, होशे ने लगभग 60 या अधिक वर्षों तक परमेश्वर से प्रकाशनों को प्राप्त किया — यारोबाम द्वितीय के शासनकाल के अंतिम दशक से लेकर हिजकिय्याह के शासनकाल तक। इन

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

दशकों में परमेश्वर ने उसके समक्ष कई बातों को प्रकट किया, शायद उससे कहीं अधिक जो उसकी पुस्तक के चौदह छोटे-छोटे अध्यायों में पाया जाता है।

इस बात को समझने के लिए कि कैसे होशे ने अपनी पुस्तक की रचना की, हमें इस बात को मन में रखना होगा कि परमेश्वर ने एक ही समय में होशे की सब भविष्यवाणियों को प्रकट नहीं किया था। जैसे कि हम पहले से स्पष्ट कर चुके हैं, परमेश्वर ने होशे को तब प्रकाशन प्रदान किए जब 744 ईसा पूर्व में इस्राएल के राज्य ने अश्शूर की ताकत के बढ़ने का सामना किया, जब 732 और 722 ईसा पूर्व में अश्शूर ने आक्रमण किए थे। यदि हम इन विभिन्न ऐतिहासिक पृष्ठभूमियों को ध्यान में रखने में विफल रहते हैं, तो ऐसा लगेगा कि होशे ने कई बार अपनी बातों के विरोध में बातें कहीं, विशेषकर यहूदा के विषय में अपनी भविष्यवाणियों में। परंतु वास्तव में हम देखेंगे कि होशे के भविष्यवाणिय दृष्टिकोण समय के साथ बदल गए क्योंकि उसने बदलती हुई परिस्थितियों को संबोधित किया।

अब जितना महत्वपूर्ण होशे की पुस्तक की ऐतिहासिक क्रम-व्यवस्था को पहचानना है, उतना ही हमें इस बात पर भी ध्यान देना होगा कि उसने अपनी भविष्यवाणियों को विषयानुसार भी व्यवस्थित किया। हमने इस अध्याय में पहले देखा था कि पद 1:1 हमारी पुस्तक का शीर्षक है और इसकी रचना होशे की सेवकाई की संपूर्ण समय-सीमा का परिचय देने के लिए की गई थी। और पद 14:9 ऐसी समाप्ति के साथ हमारी पुस्तक का अंत करता है जो अपनी पुस्तक से परमेश्वर के लोगों को बुद्धि प्राप्त करने के लिए बुलाने के होशे के व्यापक उद्देश्य को सारगर्भित करता है। पुस्तक की इन समाप्तियों की विषय-वस्तु संकेत देती है कि उनकी रचना तब की गई थी जब होशे ने अपनी पुस्तक को 701 ईसा पूर्व में सन्हेरीब के आक्रमण के समय के लगभग संकलित किया था। परंतु पुस्तक की इन समाप्तियों के बीच होशे की पुस्तक के मुख्य भाग में तीन बड़े-बड़े विभाजन पाए जाते हैं जिनमें विषय-आधारित बल हैं।

पद 1:2–3:5 में पहला विभाजन परमेश्वर की ओर से दंड और आशा पर बल देता है। ये पहले कुछ अध्याय उन आरंभिक भविष्यवाणियों को प्रकट करते हैं जिन्हें होशे ने यारोबाम द्वितीय के शासनकाल के दौरान प्राप्त किया था — वे भविष्यवाणियाँ जिन्होंने 744 ईसा पूर्व में अश्शूर की ताकत में वृद्धि को संबोधित किया। होशे ने बड़ी सावधानी से इन आरंभिक भविष्यवाणियों को चुना और व्यवस्थित किया कि वह उन शापों के संतुलित दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करे जिन्हें परमेश्वर ने अपने लोगों पर डालने का निर्णय लिया था, और साथ ही उन आशीषों को भी जो वे भविष्य में प्राप्त करें।

पद 4:1–9:9 में दूसरा विभाजन परमेश्वर की ओर से आने वाले दंड पर बल देता है। पहले विभाजन के विपरीत ये भविष्यवाणियाँ होशे की सेवकाई के बाद के चरणों से आती हैं जब होशे ने 732 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण और 722 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण के बारे में प्रकाशनों को प्राप्त किया था। ये अध्याय पूरी तरह से परमेश्वर के दंड के विषय पर ही ध्यान देते हैं। और वे प्रकट करते हैं कि परमेश्वर के दंड होशे की सेवकाई के इन चरणों में अपनी प्रचंडता में कैसे बढ़ गए थे।

पद 9:10–14:8 में तीसरा विभाजन विशेष रूप से परमेश्वर की ओर से मिलनेवाली आशा पर ध्यान देता है। अंतिम मुख्य विभाजन में ऐसे प्रकाशन भी शामिल हैं जिन्हें होशे ने 732 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण और 722 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण के पूर्वानुमान में प्राप्त किए थे। परंतु यह विभाजन आशा के विषय पर विशेष ध्यान देता है, अर्थात् उस आशा पर जिसे परमेश्वर ने होशे की सेवकाई के इन चरणों के दौरान अपने लोगों के भविष्य के लिए प्रकट की थी।

होशे की पुस्तक की व्याख्या के लिए इन ऐतिहासिक और विषय-आधारित व्यवस्थाओं के महत्व को बढ़-चढ़कर बताना बहुत मुश्किल है। कई रूपों में, वे उन कुँजियों के समान हैं जो उस बुद्धि को खोलते हैं जिसे होशे ने उन लोगों को प्रदान करना चाहा जिन्होंने हिजकिय्याह के शासनकाल के दौरान इस पुस्तक को सबसे पहले प्राप्त किया था।

हम अपने अगले अध्याय में होशे की बुद्धि का अध्ययन और अधिक गहनता से करेंगे, परंतु इस समय हमारी पुस्तक के प्रत्येक मुख्य विभाजन की विषय-वस्तु और संरचना का परिचय देना सहायक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

होगा। आइए हम पद 1:2–3:5 में परमेश्वर की ओर से दंड और आशा पर आधारित पहले विभाजन के साथ शुरू करें। हमारी पुस्तक के ये शुरूआती अध्याय सावधानी से परमेश्वर के लोगों पर आनेवाले शापों और उनके बाद आनेवाली आशीषों के बीच बड़ा संतुलित ध्यान देते हैं।

दंड और आशा (1:2–3:5)

जैसे कि हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं, ये शुरूआती अध्याय यारोबाम द्वितीय के दिनों में होशे की सेवकाई के आरंभिक अध्यायों को प्रस्तुत करते हैं, जब होशे ने 744 ईसा पूर्व में अश्शूर के शक्तिशाली हो जाने के विषय में भविष्यवाणियों को प्राप्त किया था। परंतु हम यह कैसे जानते हैं कि इसी समय होशे ने इन प्रकाशनों को प्राप्त किया था। पद 1:2 यह दर्शाता है जब यह हमें बताता है कि ये अध्याय उस समय को दर्शाते हैं, "जब यहोवा ने होशे के द्वारा पहले पहल बातें कीं।"

इस विभाजन की अन्य बातें भी इस आरंभिक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की पुष्टि करती हैं। पहली बात यह है कि होशे ने इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित किया कि जब इस्राएल ने बड़ी समृद्धि के समय का आनंद लिया तो वे मूर्तिपूजा और अन्याय जैसे पापों में पड़ गए। उसने यह भी दर्शाया कि परमेश्वर ने इस्राएल पर अश्शूरियों द्वारा अधिकार कर लेने के माध्यम से शापों को लाने का निश्चय किया। ये तथ्य होशे की सेवकाई के सबसे आरंभिक चरणों के साथ मेल खाते हैं।

दूसरी बात यह है कि इस विभाजन में यहूदा के प्रति होशे का ध्यान भी इस बात की पुष्टि करता है कि उसने इन भविष्यवाणियों को अपनी सेवकाई के पहले चरण में प्राप्त किया था। आपको याद होगा कि इस समय के दौरान उज्जियाह ने यहूदा में एक धर्मी राजा के रूप में शासन किया था। इसलिए जैसे कि हम आशा करते हैं, ये अध्याय दक्षिणी राज्य के विरुद्ध किसी शाप की घोषणा नहीं करते। इसके विपरीत, पहला विभाजन कई बार यहूदा के विषय में बड़े सकारात्मक रूप से बात करता है। उदाहरण के लिए, पद 1:6-7 को सुनें, जहाँ परमेश्वर ने इस्राएल और यहूदा के बीच एक बड़े अंतर को दर्शाया। यहाँ परमेश्वर ने यह कहा :

> मैं इस्राएल के घराने पर फिर कभी दया करके उनका अपराध किसी प्रकार से क्षमा न करूँगा। परन्तु यहूदा के घराने पर मैं दया करूँगा, और उनका उद्धार करूँगा; उनका उद्धार मैं...उनके परमेश्वर यहोवा के द्वारा करूँगा (होशे 1:6-7)।

यद्यपि उत्तरी राज्य अश्शूरियों के हाथों बड़े कष्टों को झेलने वाला था, फिर भी यह अनुच्छेद स्पष्ट करता है कि इस समय के दौरान परमेश्वर दया करेगा और यहूदा को बचाएगा। होशे ने पद 1:11 में भी यहूदा का उल्लेख सकारात्मक रूप से किया जब उसने यह कहा :

> तब यहूदी और इस्राएली दोनों इकट्ठे हो अपना एक प्रधान ठहराकर देश से चले आएँगे (होशे 1:11)।

यहाँ होशे ने दर्शाया कि जब इस्राएल ने अश्शूरियों के द्वारा आए दंड को सहा, तो परमेश्वर की आशीषों के विषय में उनकी आशा एक राजा के अधीन यहूदा के साथ उनके पुनर्मिलन से आई। इसी प्रकार पद 3:5 में होशे ने कहा :

> उसके बाद वे अपने परमेश्वर यहोवा और अपने राजा दाऊद को फिर ढूँढ़ने लगेंगे, और अन्त के दिनों में यहोवा के पास, और उसकी उत्तम वस्तुओं के लिये थरथराते हुए आएँगे (होशे 3:5)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

"अपने राजा दाऊद" का प्रत्यक्ष उल्लेख यहूदा के प्रति एक अनुकूल दृष्टिकोण को दर्शाता है क्योंकि यहूदा पर दाऊद का राजकीय घराना राज्य कर रहा था। अपनी पुस्तक के पहले विभाजन में यहूदा के प्रति होशे के पूरी तरह से सकारात्मक दृष्टिकोण इस बात की पुष्टि करते हैं कि उसने अपनी सेवकाई के आरंभ में इन भविष्यवाणियों को प्राप्त किया था जब उज्जियाह ने यहूदा की अगुवाई परमेश्वर के मार्गों में की थी।

होशे की पुस्तक के पहले विभाजन के प्रति इस दिशा-निर्धारण के साथ आइए संक्षिप्त रूप में दर्शाएँ कि कैसे ये अध्याय परमेश्वर की ओर से दंड और आशा के विषय पर बल देते हैं। होशे ने तीन मुख्य खंडों में इन अध्यायों को व्यवस्थित किया। पद 1:2–2:1 में पाया जानेवाला पहला खंड उसके पहले के पारिवारिक अनुभवों का वर्णन करता है।

पहले के पारिवारिक अनुभव (1:2–2:1)

यह खंड दो मुख्य भागों में विभाजित है। पद 1:2-9 में पहला भाग पारिवारिक वृत्तांत को बताता है। यह परमेश्वर द्वारा होशे को गोमेर नामक स्त्री से विवाह करने की आज्ञा के साथ आरंभ होता है जो एक वेश्या थी। जब उनकी संतान उत्पन्न हुई तो होशे ने उनके ऐसे नाम रखे जो इस्राएल के विरुद्ध आने वाले परमेश्वर के दंडों को दर्शाएँ। इस विवरण ने उन कष्टों की ओर ध्यान आकर्षित किया जो अश्शूर के माध्यम से इस्राएल पर आने वाले थे।

परंतु परमेश्वर के दंड पर ध्यान देने के संतुलन में होशे ने पद 1:10–2:1 में एक दूसरे भाग को भी जोड़ा जिसमें उसके आशापूर्ण भविष्यवाणिय कथन शामिल थे। एक उदाहरण के रूप में, पद 1:10 में होशे ने यह प्रकट किया :

> इस्राएलियों की गिनती समुद्र की बालू की सी हो जाएगी...और जिस स्थान में उनसे यह कहा जाता था, "तुम मेरी प्रजा नहीं हो," उसी स्थान में वे जीवित परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे (होशे 1:10)।

यद्यपि परमेश्वर इस्राएल के विरुद्ध दंड के एक समय को शुरू करने वाला था, फिर भी होशे ने यह जोड़ा कि फिर भी इस्राएल के गोत्रों के वंशजों के लिए आशीषों का एक भविष्य आने वाला था।

परमेश्वर की ओर से दंड और आशा का दूसरा मुख्य भाग पद 2:2-23 में होशे की पुस्तक के परमेश्वर के पहले मुक़द्दमे पर ध्यान देता है।

परमेश्वर का मुक़द्दमा (2:2-23)

ये पद इस पृथ्वी पर होशे के पारिवारिक अनुभवों से ध्यान को हटाकर स्वर्ग के न्याय-कक्ष की कानूनी गतिविधियों के प्रेरणा-प्राप्त विवरण की ओर लगाते हैं। अब पुराने नियम में परमेश्वर ने अपने भविष्यवक्ताओं के सामने स्वर्गीय न्याय-कक्ष में होनेवाली कानूनी गतिविधियों का ज्ञान प्रदान करने के द्वारा भविष्य के प्रति अपनी योजनाओं को बार-बार प्रकट किया था। हम इनमें से कुछ प्रकाशनों को "मुक़द्दमें" कहते हैं क्योंकि वे परमेश्वर के न्याय-कक्ष की गतिविधियों के संपूर्ण विवरण प्रदान करते हैं। वे अक्सर परमेश्वर को सिंहासन पर बैठे दर्शाते हैं, प्रतिभागियों को न्याय-कक्ष में उसके बुलावों का वर्णन करते हैं, दोषी के विरुद्ध लगे आरोपों और उसके साथ बातचीत की सूचना देते हैं, और निर्णय की घोषणाओं को बताते हैं।

> भविष्यवाणिय निर्णय के कई वक्तव्य वाचाई मुक़द्दमे का रूप लेते प्रतीत होते हैं। वाचाई मुक़द्दमे का विचार अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति पर आधारित है, और इसके बारे में हमारे सबसे अच्छे उदाहरण हित्ती कूटनीतिक पत्रों में हैं जो हमारे पास हैं, जहाँ हित्ती कूटनीतिज्ञ वासल राष्ट्र के पास जाता है और उस संधि की शर्तों को बताता

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> है जिसे वासल राजा ने स्वीकार तो किया था परंतु अब उनका उल्लंघन कर दिया। भविष्यवक्ता उस तरह की भूमिका को लेता प्रतीत होता है। और ऐसे कई महत्वपूर्ण अनुच्छेद हैं जिनमें ऐसे बहुत से उदाहरण पाए जाते हैं। अपनी पूर्णता में, उन बातों में प्रतिवादियों और गवाहों का बुलाया जाना शामिल होगा...फिर यह होगा कि सुजरेन, अर्थात् महान राजा और वासल राजा के बीच वाचा के संबंध का इतिहास बताया जाएगा; उसके बाद वासल पर संधि के उल्लंघन का अभियोग लगाया जाएगा, जिसके बाद या तो उसे चेतावनी दी जाएगी या फिर उस संधि के उल्लंघन के कारण उसे दंड दिया जाएगा।
>
> — डॉ. डगलस ग्रोप

होशे की पुस्तक में पहला स्वर्गीय मुक़द्दमा पद 2:2 में शुरू होता है जहाँ इस्राएल को परमेश्वर के बुलावों के इन शब्दों के द्वारा न्याय-कक्ष में बुलाया जाता है।

> अपनी माता से विवाद करो, विवाद (होशे 2:2)।

आधुनिक पाठकों के लिए यह न्याय-कक्ष में बुलाने का एक विचित्र बुलावा हो सकता है। परंतु शब्द "विवाद" यहाँ इब्रानी क्रिया "*रिब*" (ריב) का अनुवाद है। इस शब्द का इस्तेमाल अक्सर भविष्यवाणी की पुस्तकों में स्वर्ग के न्याय-कक्ष में एक "कानूनी विवाद" या "मुक़द्दमे" के लिए किया जाता था। यहाँ "माता" इस्राएल राज्य की राजधानी शोमरोन थी जहाँ इस्राएल के अगुवे निवास करते थे। अतः वास्तव में परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को शोमरोन में रहनेवाले उनके अगुवे के विरुद्ध स्वर्गीय मुक़द्दमे में प्रवेश करने के लिए बुलाया — एक ऐसे मुक़द्दमे में जिसका न्याय परमेश्वर स्वयं करेगा।

इस पूरे मुक़द्दमे के दौरान, परमेश्वर ने उन तरीकों पर ध्यान दिया जिनमें इस्राएल ने होशे की पत्नी गोमेर की तरह व्यवहार किया था। गोमेर होशे के प्रति विश्वासघाती थी और वह अपने बच्चों पर कष्टों को लेकर आई। और इस्राएल के अगुवे परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य थे और वे इस्राएल राज्य पर कष्टों को लेकर आए। परंतु इस मुकद्दमे में होशे ने केवल यही नहीं बताया कि परमेश्वर ने इस्राएल राज्य को उसकी वाचा के शापों को सहने का दंड दिया। *बल्कि* उसने यह भी बताया कि परमेश्वर एक दिन इस्राएल को अपनी ओर वापस लाएगा। दंड के समय के बाद परमेश्वर इस्राएल को अपने प्रति पुनर्स्थापित करेगा और उत्तरी गोत्रों पर दया करेगा।

स्वर्गीय न्याय-कक्ष के इस विवरण के बाद होशे ने पद 3:1-5 में अपने बाद के पारिवारिक अनुभवों के एक विवरण के साथ ईश्वरीय दंड और आशा पर ध्यान देने के इस वर्णन की समाप्ति की।

बाद के पारिवारिक अनुभव (3:1-5)

अपने पहले के पारिवारिक अनुभवों के विवरण के समानांतर होशे ने 3:1-3 में आत्मकथात्मक पारिवारिक विवरण को आरंभ किया। उसकी पत्नी एक वेश्या के रूप में अपने जीवन जीने के पुराने तरीके की ओर लौट गई थी, परंतु परमेश्वर ने होशे को आज्ञा दी कि वह उसके प्रति फिर से प्रेम दिखाए। अतः होशे ने गोमेर को मोल लिया और उसे अपने घर ले आया।

इस संक्षिप्त विवरण के बाद पद 3:4, 5 में होशे के आशापूर्ण भविष्यवाणिय चिंतनों की दूसरी कड़ी आती है। इन पदों में होशे ने स्पष्ट किया कि इस्राएल का राज्य एक अवधि तक परमेश्वर की ओर से कष्टों को सहेगा। परंतु भविष्य में एक दिन आएगा जब परमेश्वर के साथ इस्राएल के संबंध के फलस्वरूप इस्राएल को बड़ी आशीषें प्राप्त होंगी।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> **इस रूपक में अपने लोगों के बीच** सम्मानित भविष्यवक्ता, होशे परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है। निस्संदेह परमेश्वर होशे से बहुत महान है, परंतु यह केवल एक उपमा है। दूसरी ओर, वह व्यभिचारिणी स्त्री इस्राएल के लोगों का प्रतिनिधित्व करती है...उन्होंने यहोवा को त्याग देने और अन्य देवताओं की आराधना करने के द्वारा व्यभिचार किया था। इसलिए परमेश्वर ने होशे को अपनी कहानी प्रकट करने के लिए कहा — "यद्यपि इस्राएल के लोग मुझसे दूर थे, वे अन्य देवताओं की आराधना कर रहे थे, जब वे मिस्र में थे तब पाप में जी रहे थे, फिर भी मैं उनके पास गया और उनसे विवाह किया, जबकि वे तब भी बहुत दूर थे और व्यभिचार में जी रहे थे। जब वे मुझसे दूर थे, तभी मैंने उन्हें बचाया। मैंने उन्हें इसलिए नहीं बचाया कि वे अच्छे लोग थे, बल्कि मैंने अपने अनुग्रह के कारण उन्हें बचाया।"
>
> विचित्र बात यह है कि परमेश्वर ने होशे को बताया कि इस स्त्री से विवाह करने के बाद वह व्यभिचार में लौट जाएगी। परंतु उसने होशे से कहा कि वह जाकर उसे वापस अपने पास ले आए। इस्राएल के लोगों के साथ हमारे परमेश्वर ने ठीक ऐसा ही किया। न केवल परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को बचाया और उन्हें ऊपर उठाया, यद्यपि वे मिस्र में व्यभिचार में रह रहे थे, बल्कि बचाए जाने और परमेश्वर के साथ एक वाचा में प्रवेश करने के बाद वे लोग अन्य देवताओं के साथ व्यभिचार करने के लिए वापस लौट गए। और यद्यपि परमेश्वर ने लोगों को दंड दिया और उनकी ताड़ना की, फिर भी अपने अनुग्रह में, जैसे कि होशे अपनी व्यभिचारिणी पत्नी को वापस लाया था, परमेश्वर अपनी "पत्नी" के पास गया — अर्थात् उन लोगों के पास जिन्होंने विवाह के बाद व्यभिचार किया था — और उन्हें अपने पास वापस लेकर आया।
>
> — श्री शेरिफ अतेफ फहीम, अनुवाद

अतः उसके उन कुछ प्रकाशनों को संकलित करने और उन्हें व्यवस्थित करने के द्वारा जिन्हें उसने अपनी सेवकाई के आरंभिक चरण में प्राप्त किया था, होशे ने हिजकिय्याह के समय में यहूदा के अगुवों के प्रति एक सावधानीपूर्ण संतुलित दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया।

हमारी पुस्तक के समय, जिस दंड की चेतावनी परमेश्वर ने दी थी वह उत्तरी राज्य के पतन के साथ पहले ही पूरी हो चुकी थी। परंतु परमेश्वर के लोगों को आशा नहीं खोनी थी। दंड का यह समय भविष्य के एक ऐसे समय की ओर अगुवाई करेगा जब इस्राएल परमेश्वर की ओर से बड़ी आशीषों को प्राप्त करेगा।

पहले विभाजन में परमेश्वर की ओर से दंड और आशा के संतुलित प्रस्तुतिकरण के बाद दूसरा विभाजन पद 4:1–9:9 में परमेश्वर की ओर से प्रकट होने वाले दंड पर ध्यान को ले जाता है।

प्रकट होने वाला दंड (4:1–9:9)

हमने इस भाग का शीर्षक "प्रकट होने वाला" दिया है क्योंकि इसमें ऐसे प्रकाशन पाए जाते हैं जिन्हें होशे ने समय की एक लंबी अवधि के दौरान प्राप्त किया था। और हम इसे "दंड" के रूप में कहते हैं क्योंकि यह पूरी तरह से उन तरीकों पर ध्यान देता है जिनमें परमेश्वर ने होशे की सेवकाई के इन दशकों के दौरान इस्राएल और यहूदा के विरुद्ध अपने वाचाई शापों को निर्देशित किया था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

मोटे तौर पर, प्रकट होने वाले दंड पर आधारित ये अध्याय दो मुख्य भागों में विभाजित होते हैं : पद 4:1–5:7 में परमेश्वर के और अधिक मुक़द्दमें, और फिर पद 5:8–9:9 में चेतावनी देने के लिए परमेश्वर की बुलाहटें। आइए पहले परमेश्वर के मुक़द्दमों को देखें।

परमेश्वर के मुक़द्दमें (4:1–5:7)

इस विभाजन में परमेश्वर के पहले के मुक़द्दमें पद 4:1-19 में पाए जाते हैं। एक बार फिर, परमेश्वर ने होशे को स्वर्गीय न्याय-कक्ष में कानूनी गतिविधियों का ज्ञान प्रदान करने के द्वारा उसके सामने अपनी योजनाओं को प्रकट किया। पद 4:1 में उसके बुलावों को सुनिए :

> **हे इस्राएलियो, यहोवा का वचन सुनो; इस देश के निवासियों के साथ यहोवा का मुक़द्दमा है (होशे 4:1)।**

जैसे कि यह आरंभिक पद दर्शाता है, परमेश्वर ने इस्राएल को न्याय-कक्ष में बुलाया क्योंकि उसके पास उनके विरुद्ध "मुक़द्दमा" था। यहाँ उसी शब्द का प्रयोग किया गया है जिस इब्रानी शब्द को हमने पहले सीखा था *"rib"* (ריב), अर्थात् मुक़द्दमे के लिए प्रयुक्त होनेवाला तकनीकी शब्द।

इस पहले के मुक़द्दमे को पहले विभाजन के ठीक बाद रखना, और साथ ही इसकी विषय-वस्तु बड़ी गहराई से यह सुझाव देती है कि यह 732 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण के विषय में होशे की एक पहले की भविष्यवाणी थी। जैसे कि आपको याद होगा, इस्राएल में इस समय के दौरान मनहेम और पकह्याह ने मूर्तिपूजा और अन्याय को बढ़ावा देना जारी रखा। और जब मनहेम ने अश्शूर की ओर से यकायक आक्रमण को सहा, तो परमेश्वर में सुरक्षा पाने की अपेक्षा उसने और उसके बाद पकह्याह ने अश्शूर और अश्शूरियों के देवताओं के साथ अपने गठजोड़ को फिर से अभिपुष्ट किया।

इस पूरे मुक़द्दमे के दौरान परमेश्वर ने इस्राएल सटीक रूप से इन जैसे पापों का आरोप लगाया। और फिर इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि परमेश्वर ने घोषणा की कि वह कड़े अश्शूरी आक्रमण के रूप में इस्राएल पर शापों को उंडेलेगा — वह संभावित रूप से 732 ईसा पूर्व के आक्रमण का उल्लेख कर रहा था। इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का सबसे बड़ा प्रमाण वह बात है जो होशे ने अपने पहले के मुक़द्दमे में यहूदा के विषय में कही थी। सुनिए पद 4:15 में होशे ने क्या कहा :

> **हे इस्राएल, यद्यपि तू छिनाला करता है, तौभी यहूदा दोषी न बने (होशे 4:15)।**

जैसे कि हम यहाँ देख सकते हैं, इस समय परमेश्वर ने इस्राएल की परिस्थितियों और यहूदा की परिस्थितियों के बीच एक बड़े अंतर को दर्शाया। इस्राएल परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य होने का दोषी था। परंतु परमेश्वर ने यहूदा को केवल यह चेतावनी दी कि वह उत्तरी राज्य के समान न बने। इस्राएल और यहूदा के बीच यह अंतर हमें यहूदा की उन परिस्थितियों का स्मरण दिलाता है जब उज्ज़िय्याह और योताम ने धर्मी राजाओं के रूप में राज्य किया। अतः 732 ईसा पूर्व के आक्रमण से पहले परमेश्वर ने यहूदा के विरुद्ध कोई शाप नहीं दिए।

यह हमें पद 5:1-7 में परमेश्वर के बाद के मुक़द्दमे की ओर लेकर आता है। यहाँ हम स्वर्गीय न्याय-कक्ष के अन्य दृश्य को देखते हैं। सुनिए किस प्रकार पद 5:1 दोषी को न्याय-कक्ष में बुलाता है :

> **हे याजको, यह बात सुनो! हे इस्राएल के सारे घराने, ध्यान देकर सुनो! हे राजा के घराने, तुम भी कान लगाओ! क्योंकि तुम्हारा न्याय किया जाएगा (होशे 5:1)।**

यद्यपि यह अनुच्छेद तकनीकी शब्द "*rib*" (ריב) का प्रयोग नहीं करता, फिर भी हम यहाँ देखते हैं कि परमेश्वर ने दोषियों को न्याय-कक्ष में बुलाया — "याजकों," "इस्राएलियों," और "राजा के घराने" को — और घोषणा की कि इन बुलावों का उद्देश्य "न्याय करना" अर्थात् दंड देना, या इब्रानी में *मिशपात*

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

(מִשְׁפָּט) था। शब्द *रिब* (ריב) के समान, यह शब्द स्वर्ग के न्याय-कक्ष की कानूनी गतिविधियों को दर्शाता है।

यह बाद का मुक़द्दमा दर्शाता है कि इसकी शुरुआत तब हुई जब होशे ने बाद की भविष्यवाणियों को प्राप्त किया और उनकी घोषणा की, यह तब हुआ जब 732 ईसा पूर्व के अश्शूरी आक्रमण का समय पास आता जा रहा था। होशे 5:1 इस ऐतिहासिक दिशा-निर्देश की ओर इंगित करता है जब यह उल्लेख करता है कि इस्राएल के कुलीन लोगों ने "मिस्पा और ताबोर" के लोगों पर अत्याचार किया। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि पुरातात्विक प्रमाण दर्शाता है कि ये स्थान केवल 732 ईसा पूर्व तक ही इस्राएल के नियंत्रण में रहे, जब तिग्लत्पिलेसेर तृतीय ने इस्राएल पर आक्रमण किया और उन पर कब्ज़ा कर लिया। ध्यान देने योग्य बात यह भी है कि पद 5:13 में परमेश्वर ने इस्राएल पर तिग्लत्पिलेसेर तृतीय, या "राजा," जैसे कि यह पद उसे संबोधित करता है, से व्यर्थ सहायता मांगने का आरोप लगाया।

आपको याद होगा कि इस्राएल में इस समय राजा पेकह ने मूर्तिपूजा और अन्याय को जारी रखा था। उसने अश्शूर को कर देने से बचने के लिए अराम देश के साथ भी गठजोड़ किया — अरामी-इस्राएली गठजोड़। अतः परमेश्वर के बाद के मुक़द्दमे ने चेतावनी दी कि इस्राएल के विरुद्ध शाप विनाशकारी अश्शूरी आक्रमण के द्वारा आ रहे थे।

एक बार फिर, इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण यहूदा के प्रति उसका ध्यान है। जैसा कि हमने इस अध्याय में पहले उल्लेख किया था, आहाज अरामी-इस्राएली गठजोड़ से ठीक पहले यहूदा का राजा बना। परंतु अपने पिता और दादा के विपरीत आहाज ने यहूदा में मूर्तिपूजा और अन्याय को बढ़ावा दिया। उसने अपने शत्रुओं के विरुद्ध सुरक्षा के लिए अश्शूरियों और उनके देवताओं के साथ गठजोड़ किया। और इसके फलस्वरूप, अपने बाद के मुक़द्दमे में परमेश्वर ने पहली बार यहूदा के विरुद्ध शापों की चेतावनी दी। सुनिए किस प्रकार पद 5:5 यहूदा को संबोधित करता है :

> **इस्राएल [के लोग]...ठोकर खाएँगे, और यहूदा भी उनके संग ठोकर खाएगा (होशे 5:5)।**

परमेश्वर के पहले के मुक़द्दमे के साथ यहाँ विपरीतता को देखिए। पद 4:15 में परमेश्वर ने यहूदा को इस्राएल के समान पापपूर्ण न बनने की चेतावनी दी। परंतु जैसा कि यह पद दर्शाता है, इस बाद के मुक़द्दमे के समय तक इस्राएल के साथ-साथ यहूदा परमेश्वर के सामने दोषी बन गया था क्योंकि आहाज ने उन्हें भटका दिया था।

> अराम और इस्राएल के गठजोड़ ने वास्तव में आहाज के दिनों में आक्रमण किया और अश्शूर का विरोध करने के लिए उस गठजोड़ में उनका साथ देने के लिए यहूदा को बाध्य किया। अब इस कार्य के परिणाम का अंदाजा लगाना आसान था। अश्शूरियों को यह पसंद नहीं आया, और इसके फलस्वरूप कुछ ही वर्षों बाद अश्शूरी आए और अराम का पूरी तरह से सर्वनाश कर दिया और इस्राएल को उसके घुटनों पर ले आए, और उन्हें ऐसे वासल बनाया जिन्हें अश्शूर के राज्य को भारी कर देना होता था। और वास्तव में, दक्षिणी राज्य को भी कष्ट झेलना पड़ा क्योंकि न केवल उन पर इस गठजोड़ ने आक्रमण किया, बल्कि इसलिए भी क्योंकि उन्होंने सुरक्षा के लिए स्वयं को अश्शूर के राज्य के प्रति समर्पित कर दिया था। भविष्यवक्ता यशायाह ने वास्तव में राजा आहाज को आगाह कर दिया था, "ऐसा न कर। तू यहोवा से सहायता को खोज और वह तुझे उस बड़े गठजोड़ से बचाएगा जो तुझ पर आक्रमण कर रहा है। परंतु आहाज ने इससे इनकार कर दिया। उसने कहा, "नहीं, मुझे उससे सहायता चाहिए जिसे मैं देख सकता हूँ और

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> वह अश्शूर का साम्राज्य है।" इसलिए उस समय यहूदा भी अश्शूर के साम्राज्य के अधीन एक वासल राष्ट्र बन गया।
>
> — डॉ. रिचर्ड, एल. प्रैट, जूनियर

परमेश्वर के मुक़द्दमे के बाद प्रकट होने वाले दंड के विषय में होशे की भविष्यवाणियाँ पद 5:8–9:9 में चेतावनी के लिए परमेश्वर की बुलाहटों में बदल जाती हैं।

चेतावनी के लिए परमेश्वर की बुलाहटें (5:8–9:9)

प्राचीन इस्राएल में अक्सर मेढ़े के खोखले सींग — इब्रानी भाषा में *शोफार* (שׁוֹפָר) — या चांदी के नरसिंगे — इब्रानी भाषा में *खात्सोत्सराह* (חֲצֹצְרָה) — को बजाने के द्वारा युद्ध के लिए आह्वान किया जाता था। और कई अवसरों पर स्वयं परमेश्वर ने इस रीति का उल्लेख करने के द्वारा युद्धों की घोषणा की या उनका फिर से आह्वान किया। इस खंड में हम ऐसी दो बुलाहटों को देखते हैं।

चेतावनी के लिए पहली बुलाहट (5:8–7:16)

चेतावनी की पहली बुलाहट पद 5:8–7:16 में पाई जाती है। यह पद 5:8 इन शब्दों के साथ शुरू होती है : गिबा में "नरसिंगा" — शोफार (שׁוֹפָר) — "और रामा में तुरही" — खात्सोत्सराह (חֲצֹצְרָה) — "फूँको।" जब हम चेतावनी की इस पहली बुलाहट की विषय-वस्तु को जांचते हैं, तो ऐसा लगता है कि यह 722 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण के विषय में होशे की पहले की भविष्यवाणियों के साथ आई थी। प्रमाण के रूप में, दो अनुच्छेद 732 ईसा पूर्व में अश्शूर के पिछले आक्रमण की ओर संकेत करते हैं। होशे 5:11 दर्शाता है कि कैसे अश्शूरियों ने इस्राएल पर "अंधेर" किया था और वह "मुक़द्दमा हार गया" था। होशे 6:1 बताता है कि इस्राएल को "फाड़ा" और "मारा" गया। इसके अतिरिक्त पद 7:11 में परमेश्वर ने इस्राएल पर आरोप लगाया कि वे "मिस्रियों की दोहाई देते, और अश्शूर को चले जाते हैं" — यह इस समय के दौरान इस्राएल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय संधियों को बदलने का उल्लेख है।

जैसा कि हम जानते हैं, अश्शूरियों ने 732 ईसा पूर्व में इस्राएल पर अपनी विजय के बाद राजा होशे को इस्राएल के राजा के रूप में नियुक्त कर दिया था। राजा होशे ने मूर्तिपूजा और अन्याय करना जारी रखा, और कुछ समय तक उसने अश्शूर के साथ अपने गठजोड़ को बड़े जोश के साथ बनाए रखा। परंतु बाद में उसने सुरक्षा के लिए मिस्र की ओर मुड़ने के द्वारा अश्शूरी अधिकार से छुटकारा पाने का प्रयास किया। भविष्यवक्ता होशे ने यह चेतावनी देने के द्वारा कि और अधिक शाप परमेश्वर की ओर से आने वाले हैं, इन पापों के बड़े दुष्परिणामों के बारे में बताया — अर्थात् ऐसे शाप जो 722 ईसा पूर्व में अश्शूर के विनाशकारी आक्रमण के रूप में आए।

इस ऐतिहासिक परिस्थिति का समर्थन उस विशेष ध्यान के द्वारा भी किया जाता है जो ये अध्याय यहूदा के राज्य पर देते हैं। इस समय आहाज यहूदा पर राज्य कर रहा था और उसने यहूदा की अगुवाई मूर्तिपूजा और अन्याय की ओर की। और परमेश्वर पर भरोसा करने की अपेक्षा आहाज ने अश्शूर और उसके देवताओं के साथ एक संधि के द्वारा अपने शत्रुओं से सुरक्षा को खोजा। फलस्वरूप, ये अध्याय यहूदा के विरुद्ध परमेश्वर के शापों पर बहुत ध्यान देते हैं। पद 5:10-14 को सुनिए जहाँ होशे ने इन शब्दों को कहा :

> यहूदा के हाकिम उनके समान हुए हैं जो सीमा बढ़ा लेते हैं; मैं उन पर अपनी जलजलाहट जल के समान उण्डेलूँगा...मैं...यहूदा के घराने के लिये सड़ाहट के समान हूँगा...यहूदा...अपना घाव [देखेगा]...मैं...यहूदा के घराने के लिये जवान

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> सिंह बनूँगा। मैं आप ही उन्हें फाड़कर ले जाऊँगा; जब मैं उठा ले जाऊँगा, तब मेरे पंजे से कोई न छुड़ा सकेगा (होशे 5:10-14)।

और पद 6:4 में परमेश्वर ने यह कहते हुए आहाज और यहूदा पर अपने क्रोध को व्यक्त किया :

> हे एप्रैम, मैं तुझ से क्या करूँ? (होशे 6:4)

और फिर पद 11 में परमेश्वर ने यह भी कहा :

> हे यहूदा...तेरे निमित्त भी बदला ठहराया हुआ है (होशे 6:11)।

यहाँ परमेश्वर ने घोषणा की कि इस्राएल के राज्य के साथ-साथ यहूदा के लिए भी बदला ठहराया हुआ था। अब हमें ध्यान देना चाहिए कि इस पद का दूसरा भाग परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना के बारे में बात करता है। परंतु जैसे कि कई व्याख्याकारों, और कुछ आधुनिक अनुवादों ने दर्शाया है, पद 11 का दूसरा भाग वास्तव में उस भविष्यवाणी से संबंधित है जो पद 7:1 में पाई जाती है। इसलिए इस दृष्टिकोण में ठहराया हुआ "बदला" अश्शूर के हाथों यहूदा का विनाश था।

चेतावनी की दूसरी बुलाहट (8:1–9:9)

चेतावनी के लिए परमेश्वर की दूसरी बुलाहट 8:1–9:9 में पाई जाती है। यह 8:1 में "अपने मुँह में नरसिंगा" — या शोफोर (שׁוֹפָר) — "लगा" की आज्ञा के साथ शुरू होती है। चेतावनी के लिए इस दूसरी बुलाहट की विषय-वस्तु सुझाव देती है कि यह उन बाद की भविष्यवाणियों में थी जिनकी घोषणा होशे ने तब की जब 722 ईसा पूर्व में अश्शूर का आक्रमण निकट आ रहा था। इस समय, इस्राएल के राजा होशे ने मूर्तिपूजा और अन्याय को बढ़ावा देना जारी रखा। उसने मिस्र के साथ अपने गठजोड़ पर निर्भर रहना भी जारी रखा। और परिणामस्वरूप, होशे ने परमेश्वर के आने वाले शापों की चेतावनी दी। उसने पद 9:3 में घोषणा की कि, "वे अश्शूर में अशुद्ध वस्तुएँ खाएँगे।" उसके कुछ ही समय बाद, शल्मनेसेर पंचम ने शोमरोन पर अधिकार कर लिया। और 722 ईसा पूर्व में अश्शूर के नए राजा सर्गोन द्वितीय ने शोमरोन को नाश कर दिया और इस्राएल के राज्य का अंत कर दिया।

> एक प्रश्न जो बहुत से लोगों को विचलित कर सकता है, वह यह है, "परमेश्वर ने कैसे अपने लोगों को अश्शूरियों जैसे मूर्तिपूजकों के हाथों में पड़ने दिया?" होशे यह दर्शाने के द्वारा इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करता है कि वे लोग इस दंड के योग्य थे। परमेश्वर ने बार-बार अपने लोगों को चेतावनी दी थी। परमेश्वर ने भविष्यवक्ताओं को भेजा था। परमेश्वर ने उन्हें बताया था कि उनकी अनाज्ञाकारिता, उनके विश्वासघात के दुष्परिणाम होंगे। फिर भी, उन्होंने वाचा के प्रति अपने विश्वासघात से मन नहीं फिराना चाहा, जैसे कि होशे अपनी पुस्तक में इसे सजीव रूप से प्रस्तुत करता है। अतः होशे उन्हें यह बताने के लिए लिखता है कि, "तुम सब जो कष्टों को सह रहे हो, यह तुम्हारे ही किए कार्यों का फल है। परमेश्वर ने तुम्हें चेतावनी दी थी पर तुमने मन फिराना न चाहा।" इसलिए उस दंड को सहने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं था जिसकी चेतावनी परमेश्वर ने बहुत पहले ही दे दी थी।
>
> — डॉ. डेविड कोरेआ, अनुवाद

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

इस ऐतिहासिक परिस्थिति की पुष्टि उसके द्वारा भी होती है जो यह अनुच्छेद यहूदा के बारे में कहता है। इस्राएल के अस्तित्व के इन अंतिम वर्षों के दौरान आहाज और हिजकिय्याह यहूदा में सह-शासक थे। हिजकिय्याह ने यहूदा को आहाज की मूर्तिपूजा और अन्याय से दूर हटाना शुरू किया। और इस रूप में वह एक सच्चा सुधारक था। परंतु हिजकिय्याह ने आक्रमण के विरुद्ध यहूदा के गढ़ों को मजबूत बनाने के द्वारा अश्शूर को रोकने के लिए अपनी शक्ति पर भी भरोसा किया। और उसने परमेश्वर की ओर मुड़ने की अपेक्षा मिस्र और मिस्र के देवताओं के साथ गठजोड़ करने का प्रयास किया। इन कारणों से परमेश्वर ने यह घोषणा की कि यहूदा अश्शूर के माध्यम से और भी अधिक शापों का सामना करेगा। जैसे कि परमेश्वर ने पद 8:14 में कहा :

> **यहूदा ने बहुत से गढ़वाले नगरों को बसाया है; परन्तु मैं उनके नगरों में आग लगाऊँगा, और उस से उनके गढ़ भस्म हो जाएँगे (होशे 8:14)।**

यह भविष्यवाणी लगभग दो दशकों बाद 701 ईसा पूर्व में पूरी हुई जब सन्हेरिब ने यहूदा पर आक्रमण किया, और उसके अधिकांश नगरों को नाश कर दिया तथा यरूशलेम को घेर लिया।

जैसे कि आप कल्पना कर सकते हैं, दंड की इन सारी भविष्यवाणियों के इस्राएल और यहूदा के लिए बहुत से अर्थ थे जब होशे ने उन्हें सबसे पहले प्राप्त किया था। प्रत्येक कदम पर उन्होंने दंड के आने की चेतावनी दी और मन फिराने की बुलाहट दी। परंतु बाद में जब होशे ने इन भविष्यवाणियों को अपनी पुस्तक के दूसरे विभाजन के रूप में रखा, तो दंड की चेतावनियाँ पहले ही पूरी हो चुकी थीं। इस्राएल 722 ईसा पूर्व में अश्शूर के हाथों पराजित हो चुका था, और अश्शूर ने हिजकिय्याह के शासनकाल के दौरान अधिकाँश यहूदा पर आक्रमण करके उसे नष्ट कर दिया था। फिर भी, इन भविष्यवाणियों में हिजकिय्याह के समय के यहूदा के अगुवों को सिखाने के लिए बुद्धि की बहुत सी बातें थीं। वे न केवल विवरण के साथ इन बातों को समझाती हैं कि परमेश्वर ने इस्राएल राज्य को क्यों नष्ट किया था, बल्कि उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि परमेश्वर ने यहूदा के विरुद्ध भी अश्शूर को ऐसी विनाशकारी शक्ति के रूप में क्यों भेजा।

अब क्योंकि हमने देख लिया है कि होशे की पुस्तक के पहले विभाजन की संरचना और विषय-वस्तु कैसे परमेश्वर की ओर से दंड और आशा पर ध्यान केंद्रित करती है, और कैसे दूसरा विभाजन परमेश्वर के प्रकट होने वाले दंड को दर्शाता है, इसलिए अब हमें पुस्तक के तीसरे मुख्य विभाजन की ओर मुड़ना चाहिए : पद 9:10–14:8 में परमेश्वर की ओर से आशा के प्रकट होने के विषय में होशे की भविष्यवाणियाँ।

आशा का प्रकट होना (9:10–14:8)

हम इस विभाजन को “प्रकट होने” के रूप में कहते हैं क्योंकि होशे ने एक बार फिर उन भविष्यवाणियों से बात की जिन्हें उसने कई वर्षों के दौरान प्राप्त किया था। और हम इसे “आशा” के रूप में कहते हैं क्योंकि यह इस बात पर बल देता है कि कैसे परमेश्वर के लोग उसके दंड के अधीन बड़े कष्टों को सहने के बाद भी परमेश्वर की आशीषों में निरंतर आशा रख सकते हैं।

अपनी पुस्तक के दूसरे विभाजन में होशे ने इस्राएल और यहूदा के विरुद्ध परमेश्वर के केवल दंड के बारे में ही बात की थी। यदि होशे अपनी पुस्तक को वहीं समाप्त कर देता तो कई महत्वपूर्ण सवाल शायद बिना उत्तर दिए ही रह जाते। इस्राएल और यहूदा ने जिन कठिनाइयों का सामना किया क्या उनका अर्थ यह था कि परमेश्वर भविष्य में कभी अपने लोगों को आशीष नहीं देगा? क्या परमेश्वर के लोग सदा-सर्वदा के लिए नष्ट हो जाएँगे? होशे ने इस तरह के सवालों का उत्तर देने के लिए अपनी पुस्तक के तीसरे विभाजन को लिखा। यहाँ उसने हिजकिय्याह के समय के यहूदा के अगुवों के सामने प्रकट किया कि क्यों उन्हें परमेश्वर की भविष्य की आशीषों में अब भी आशा रखनी चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

होशे की पुस्तक का तीसरा विभाजन पुस्तक का सबसे जटिल भाग है क्योंकि होशे ने कई भविष्यवाणियों, और यहाँ तक कि भविष्यवाणियों के छोटे-छोटे अंशों को भी एक साथ जोड़ दिया। परंतु मोटे तौर पर, हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि यह पांच मुख्य खंडों में विभाजित है, जिनमें से प्रत्येक की शुरुआत उस तुलना से होती है जो परमेश्वर ने इस्राएल से की थी।

परमेश्वर ने पद 9:10-12 में इस्राएल की तुलना फल से; पद 9:13-17 में बसे हुए स्थान से; पद 10:1-10 में लहलहाती हुई दाखलता से; पद 10:11-15 में सीखी हुई बछिया से; और अंततः पद 11:1–14:8 में प्रिय बालक या पुत्र से की। ये खंड कई तरीकों से इन तुलनाओं का और अधिक विस्तार से वर्णन करते हैं, और हम अपने अगले अध्याय में इन वर्णनों पर और अधिक ध्यान देंगे। परंतु इस परिचयात्मक अध्याय में समय हमें इतनी ही अनुमति देगा कि हम आशा के एक ऐसे सरल प्रारूप को दर्शाएँ जो प्रत्येक खंड के आरंभ में पाया जाता है।

जब हम होशे की पुस्तक के इस विभाजन का अध्ययन करते हैं तो जितना संभव हो उतना इस बात को पहचानना महत्वपूर्ण है कि होशे ने इस प्रत्येक खंड के प्रकाशनों को कब प्राप्त किया था। इनमें से कुछ ऐतिहासिक संदर्भों को पहचानना दूसरों से अधिक सरल है। परंतु संपूर्ण रूप में, होशे उन्हीं ऐतिहासिक समयों में फिर वापस गया जिनके बारे में उसने अपनी पुस्तक के दूसरे विभाजन में बात की थी। जैसे कि हम देख चुके हैं, होशे ने दूसरे विभाजन में 732 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण और 722 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण के दौरान परमेश्वर के दंडों पर ध्यान केंद्रित किया। परंतु हमारी पुस्तक के तीसरे विभाजन में दंड पर ध्यान केंद्रित करने की अपेक्षा यह खंड समय की उसी अवधि के दौरान परमेश्वर की आशा के शब्दों को प्रस्तुत करता है।

आइए पहले पद 9:10-12 में परमेश्वर द्वारा फल के साथ इस्राएल की तुलना की ओर मुड़ने के द्वारा देखें कि यह कैसे सच है।

फल (9:10-12)

इस बात की पूरी संभावना है कि यह पहला खंड 732 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण के बारे में पहले की अन्य भविष्यवाणियों के साथ होशे के समक्ष प्रकट किया गया था। इस ऐतिहासिक परिस्थिति का सर्वोत्तम प्रमाण पद 9:11 में पाया जाता है। क्योंकि इस्राएल के राजा परमेश्वर से दूर हो गए थे, इसलिए हम पढ़ते हैं कि “एप्रैम का वैभव” — शाब्दिक रूप में “उनका वैभव,” या इब्रानी में *केवोदाम* (כְּבוֹדָם) — “पक्षी के समान उड़ जाएगा।” परमेश्वर इस्राएल के वैभव को मिटाने पर था। होशे की पुस्तक में एकमात्र अन्य स्थान जहाँ परमेश्वर ने इसकी भविष्यवाणी की थी, वह पद 4:1-19 में पाया जानेवाला परमेश्वर का पहले का मुक़द्दमा था — वह खंड जो 732 ईसा पूर्व के आक्रमण के विषय में होशे की पहले की भविष्यवाणियों से जुड़ा हुआ था। पद 4:7 में परमेश्वर ने यह कहा, “मैं उनके वैभव के बदले उनका अनादर करूँगा।” यह संबंध मजबूती से सुझाव देता है कि होशे ने अपनी पुस्तक के तीसरे विभाजन को दूसरे विभाजन के समान ही 732 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण के बारे में अपनी एक पहले की भविष्यवाणी के साथ ही आरंभ किया।

इस परिदृश्य की अभिपुष्टि इस तथ्य के साथ होती है कि ये पद यहूदा का कोई उल्लेख नहीं करते हैं। जैसे कि आपको याद होगा, उज्जियाह और योताम ने धर्मी राजाओं के समान राज्य किया और परमेश्वर ने इस समय के दौरान यहूदा पर किसी शाप की घोषणा नहीं की। इस ऐतिहासिक दिशा-निर्देश को मन में रखते हुए, सुनिए परमेश्वर ने पद 9:10 में क्या कहा :

> मैं ने इस्राएल को ऐसा पाया जैसे कोई जंगल में दाख पाए; और तुम्हारे पुरखाओं पर ऐसे दृष्टि की जैसे अंजीर के पहले फलों पर दृष्टि की जाती है। परन्तु उन्होंने पोर के बाल के पास जाकर अपने को लज्जा का कारण होने के लिये अर्पण कर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> दिया, और जिस पर मोहित हो गए थे, वे उसी के समान घिनौने हो गए (होशे 9:10)।

स्पष्ट रूप से, परमेश्वर ने इस पद में इस्राएल के पापों के बारे में बात की। परंतु इस बात पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर ने दाख और अंजीर के साथ इस्राएल की सकारात्मक तुलना के साथ *आरंभ* किया। अतः यद्यपि परमेश्वर ने 732 ईसा पूर्व में इस्राएल के विरुद्ध दंड लाने का निश्चय किया था, फिर भी उसने इस्राएल को बड़े प्रेम के साथ वैसे याद रखा जैसे कोई मधुर फलों को याद रखता है। और परमेश्वर की सकारात्मक स्मृति ने परमेश्वर के लोगों को फिर से आश्वस्त किया कि उनके लिए भविष्य में परमेश्वर की आशीषों की ओर फिर से लौटने की अब भी आशा थी।

पद 9:13-17 में पाया जानेवाला दूसरा खंड बसे हुए स्थान के रूप में इस्राएल पर ध्यान देता है और फिर इसी प्रारूप का अनुसरण करता है।

बसा हुआ स्थान (9:13-17)

हमें निश्चित रूप से नहीं पता कि होशे ने इस प्रकाशन को पहले कब प्राप्त किया। परंतु संपूर्ण रूप से, इस्राएल के विषय में होशे का विवरण इस्राएल की परिस्थितियों के साथ उपयुक्त बैठता है जब होशे ने 732 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण के बारे में भविष्यवाणियों को प्राप्त किया था। इस ऐतिहासिक आधार का समर्थन इस तथ्य के द्वारा किया जाता है कि यह अनुच्छेद यहूदा का उल्लेख नहीं करता। अतः पूरी संभावना है कि यह होशे के पास आहाज द्वारा यहूदा को परमेश्वर से दूर कर देने से पहले आई। पद 9:13 में इस खंड के आरंभ को सुनें :

> जैसा मैं ने सोर को देखा, वैसा एप्रैम को भी मनभावने स्थान में बसा हुआ देखा;
> तौभी उसे अपने बच्चों को घातक के सामने ले जाना पड़ेगा (होशे 9:13)।

यहाँ परमेश्वर ने इस्राएल को अश्शूरी आक्रमणकारियों के विरुद्ध युद्ध में उनके बच्चों के घात किए जाने की चेतावनी दी। यह दंड चाहे जितना भी भयानक था, इस पद के पहले भाग में परमेश्वर ने याद किया कि कैसे उसने "मनभावने स्थान में बसे हुए" के रूप में इस्राएल का आनंद लिया। उनके प्रति परमेश्वर की प्रेमपूर्ण स्मृति ने प्रकट किया कि भविष्य में इस्राएल द्वारा परमेश्वर की आशीषों को पाने की अब भी आशा थी।

बसे हुए स्थान के रूप में इस्राएल पर ध्यान केंद्रित करने के बाद पद 10:1-10 में होशे ने इस्राएल के राज्य की तुलना लहलहाती हुई दाखलता से की।

लहलहाती हुई दाखलता (10:1-10)

पूरी संभावना है कि यह खंड भी तब सामने आया जब होशे ने 732 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण के विषय में भविष्यवाणियों को प्राप्त किया। होशे 10:6 चेतावनी देता है कि इस्राएल के आराधना केंद्रों की संपत्ति "राजा की भेंट ठहरने" के लिए ले जाई जाएगी — पद 5:13 में भी इसी राजा का उल्लेख किया गया है। यह "राजा" तिग्लत्पिलेसेर तृतीय था जिसने 732 ईसा पूर्व के विनाशकारी आक्रमण का नेतृत्व किया था। परंतु इस बात पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि इस खंड में यहूदा का उल्लेख नहीं है। अतः इसका अर्थ यह हो सकता है आहाज ने अब तक यहूदा को भ्रष्टाचार में नहीं गिराया था। इस संदर्भ में वह सुनिए जो परमेश्वर ने 10:1 में कहा था :

> इस्राएल एक लहलहाती हुई दाखलता सी है...ज्यों ज्यों उसके फल बढ़े, त्यों त्यों
> उस ने अधिक वेदियाँ बनाईं (होशे 10:1)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

यहाँ ध्यान दीजिए कि होशे की भविष्यवाणी ने फिर से इस्राएल के विरुद्ध दंड पर ध्यान केंद्रित किया क्योंकि जितना अधिक वे समृद्ध होते गए, उन्होंने उतनी "अधिक वेदियाँ बनाईं।" इस्राएल ने अपने क्षेत्रों को अन्य देवताओं की वेदियों से भर दिया, और वे इस विद्रोह के कारण परमेश्वर के दंड को सहेंगे। परंतु पहले के समान होशे ने दंड की इस चेतावनी का आरंभ इस तथ्य से किया कि परमेश्वर ने इस्राएल को मनोहर, लहलहाती दाख के रूप में याद किया। इस तुलना ने भविष्य में इस्राएल के लिए परमेश्वर की आशीषों की आशा प्रदान की।

इस्राएल की तुलना लहलहाती दाख से करने के बाद होशे ने 10:11-15 में परमेश्वर द्वारा इस्राएल की तुलना सीखी हुई बछिया से करने के बारे में लिखा।

सीखी हुई बछिया (10:11-15)

हो सकता है कि यह खंड तब सामने आया जब होशे ने 722 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण के विषय में अपनी पहले की भविष्यवाणियों को ग्रहण किया। जैसा कि हम देख चुके हैं, इस समय के दौरान राजा होशे ने इस्राएल की अगुवाई मूर्तिपूजा और अन्याय में की। और आरंभ से ही वह सुरक्षा के लिए परमेश्वर की अपेक्षा अश्शूर और उसके देवताओं के साथ अपने गठजोड़ पर निर्भर रहा। इस कारण, परमेश्वर ने चेतावनी दी कि शाप इस्राएल पर आने वाले हैं।

इस खंड की ऐतिहासिक परिस्थिति का सबसे अधिक ध्यान देने योग्य प्रमाण यह है कि यह यहूदा के पापों का उल्लेख करता है। जैसे कि हम जानते हैं, यहूदा के राजा आहाज ने पूरे यहूदा में मूर्तिपूजा और अन्याय को बढ़ावा दिया था। उसने परमेश्वर से नहीं बल्कि अश्शूर के साथ अपने गठजोड़ से सहायता लेने का प्रयास किया। अतः पद 10:11, 12 में परमेश्वर ने संक्षिप्त रूप से यहूदा के विरुद्ध शापों की चेतावनी दी और घोषणा की कि "यहूदा... अपने लिये धर्म का बीज [बोए]।" यह पूरा खंड पद 10:11 में इन शब्दों के साथ आरंभ होता है :

> **एप्रैम सीखी हुई बछिया है, जो अन्न दाँवने से प्रसन्न होती है, परन्तु मैं ने उसकी सुन्दर गर्दन पर जुआ रखा है; मैं एप्रैम पर सवार चढ़ाऊँगा (होशे 10:11)।**

हम यहाँ देखते हैं कि परमेश्वर ने एप्रैम पर जुआ रखने की चेतावनी दी, जो कि अश्शूर के द्वारा अत्याचार के दंड का रूपक था। परंतु उस आने वाले दंड के बावजूद भी परमेश्वर ने इस्राएल को बड़ी चाहत के साथ उस "सीखी हुई बछिया... जो अन्न दाँवने से प्रसन्न होती है" के रूप में याद किया। और इस्राएल के बारे में परमेश्वर की सकारात्मक स्मृति ने भविष्य की आशा के एक आधार के रूप में इस्राएल के लिए कार्य किया।

इसके साथ ही हम परमेश्वर की ओर से आशा के प्रकट होने के इस विभाजन की अंतिम तुलना पर पहुँचते हैं, जो कि तीसरे विभाजन का अब तक का सबसे लंबा खंड है। पद 11:1–14:8 में परमेश्वर ने अपने लोगों की तुलना ऐसी वस्तु से की जो सीखी हुई बछिया से भी अधिक प्रिय थी — प्रिय बालक या पुत्र से।

प्रिय बालक (11:1–14:8)

यह लंबा खंड उन प्रकाशनों को प्रस्तुत करता है जिन्हें होशे ने तब प्राप्त किया था जब उसने 722 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण के बारे में अपनी भविष्यवाणियों को प्रदान किया था। इस समय, राजा होशे ने इस्राएल की मूर्तिपूजा और अन्याय में अगुवाई करना जारी रखा। परंतु बाद में, उसने मिस्र के साथ मूर्खतापूर्ण रूप से गठजोड़ करने की कोशिश करने के द्वारा अश्शूर से स्वतंत्र होने का प्रयास किया। परमेश्वर ने पद 11:5 में विशेष रूप से इस गठजोड़ को संबोधित किया जहाँ उसने कहा कि इस्राएल "मिस्र देश में लौटने न पाएगा; अश्शूर ही उसका राजा होगा।"

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

इस ऐतिहासिक संदर्भ की पुष्टि इस तथ्य के साथ हुई कि 11:12 और 12:2-6 में होशे ने यहूदा के विरुद्ध भी भविष्यवाणी की। जैसा कि हम पद 12:2 में पढ़ते हैं, "यहूदा के साथ भी यहोवा का मुक़द्दमा है।" हिजकिय्याह ने यद्यपि कई सुधार किए, फिर भी वह अपनी सामर्थ्य पर निर्भर रहा और यहोवा की ओर फिरने की अपेक्षा मिस्र के साथ गठजोड़ किया। इसलिए यहूदा ने 701 ईसा पूर्व में सन्हेरिब के आक्रमण के माध्यम से परमेश्वर के दंड को सहा। अब, पद 11:1-2 में इस खंड के आरंभ को सुनें :

> **जब इस्राएल बालक था, तब मैं ने उस से प्रेम किया, और अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया। परन्तु जितना वे उनको बुलाते थे, उतना ही वे भागे जाते थे; वे बाल देवताओं के लिये बलिदान करते, और खुदी हुई मूरतों के लिये धूप जलाते गए (होशे 11:1-2)।**

ये शुरूआती पद होशे के प्रारूप को एक बार फिर से प्रस्तुत करते हैं। इस्राएल ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया था। बार-बार परमेश्वर ने उनको बुलाया, परंतु "उतना ही वे भागे जाते थे" और बाल देवताओं और मूरतों की आराधना करते थे। और फलस्वरूप, दंड आने वाला था। परंतु परमेश्वर द्वारा दंड की घोषणा करने के बाद भी पद 1 दर्शाता है कि परमेश्वर अब भी इस्राएल को एक प्रिय पुत्र के रूप में मानता था। और अपने पुत्र इस्राएल के प्रति उसका प्रेम इस्राएल की भावी आशीषों की आशा का आधार था।

> **होशे 11:1 बताता है कि कैसे परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र से बुलाया। ये पद यह कहते हुए आगे बढ़ते हैं कि परमेश्वर नीचे झुका और उसने बड़े प्रेम के साथ उन्हें भोजन खिलाया और अपने लोगों की जरूरतों को पूरा किया। परंतु फिर भी, जितना अधिक उसने अपने लोगों को अपने सेवकों, अर्थात् भविष्यवक्ताओं के द्वारा बुलाया, उतना अधिक वे उससे दूर होते गए। और इसलिए परमेश्वर ने घोषणा की कि वह उन्हें दूर भेज देगा, इस बार मिस्र को नहीं, बल्कि अश्शूर उनका राजा होगा। परंतु फिर यह अध्याय अपने लोगों के प्रति उसके प्रेम से भरी परमेश्वर की वाणी, और परमेश्वर की घोषणा के साथ आगे बढ़ता है, "मैं अपने क्रोध को इस्राएल पर भड़कने न दूँगा।" मैं बुलाऊँगा, और मेरे लड़के मिस्र से चिड़ियों के समान और अश्शूर के देश से पण्डुकी की भाँति थरथराते हुए आएँगे। मैं उन्हें फिर से इस देश में बसाऊँगा, और मैं फिर से उनका परमेश्वर होऊँगा और वे फिर से मेरी प्रजा होंगे।"**
>
> **— डॉ. क्रेग एस. कीनर**

अब होशे की पुस्तक के तीसरे विभाजन में उन बातों से बढ़कर भी काफी कुछ है जो हमारा संक्षिप्त परिचय प्रकट करता है। और हम अपने अगले अध्याय में अपनी पुस्तक के इस भाग का और अधिक गहराई से अध्ययन करेंगे। फिर भी, हमने इस विषय के मुख्य केंद्र को समझने के लिए बहुत कुछ देख लिया है। होशे ने अपनी पुस्तक के इस अंतिम विभाजन की रचना इसलिए की कि यहूदा के अगुवों को बुद्धि प्राप्त हो जब इस्राएल पहले से ही अश्शूर से पराजित हो चुका था और उसके अधिकांश नागरिकों को निर्वासन में ले जाया जा चुका था। और अपनी पुस्तक के इन अंतिम अध्यायों में होशे ने उन भविष्यवाणियों से बातों को लिया जिनका प्रचार उसने अपनी पूरी सेवकाई के दौरान उन बातों में यहूदा की आशाओं को मजबूत करने में किया जिनकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी। दंड इस्राएल की कहानी का अंत नहीं था क्योंकि परमेश्वर कभी नहीं भूला था कि वह उनसे कितना प्रेम करता था। यहूदा के अगुवे बुद्धि को प्राप्त कर सकते थे और भविष्य की आशीषों की आशा को दृढ़ता से थामे रह सकते थे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

उपसंहार

होशे के इस परिचय में हमने भविष्यवक्ता की सेवकाई और उसकी पुस्तक के समय, स्थान परिस्थितियों और उद्देश्य के बीच अंतर को स्पष्ट करने के द्वारा होशे की पृष्ठभूमि को खोजने का प्रयास किया है। हमने इस बात पर ध्यान देने के द्वारा होशे की पुस्तक की संरचना और विषय-वस्तु का सर्वेक्षण भी किया है कि कैसे भविष्यवक्ता ने दंड और आशा, दंड के प्रकट होने, और परमेश्वर की ओर से आशा के प्रकट होने पर ध्यान देने के द्वारा उन लोगों को बुद्धि प्रदान की जिन्होंने उसकी पुस्तक को सबसे पहले प्राप्त किया था।

होशे की पुस्तक की रचना उस समय बुद्धि की शिक्षा देने के लिए की गई थी जब इस्राएल और यहूदा ने अपने इतिहास के एक सबसे कठिन समय का सामना किया था, अर्थात् अश्शूरियों के माध्यम से आए दंड के संकट का। और उसकी पुस्तक ऐसी अंतर्दृष्टियाँ प्रदान करती हैं जिनकी आवश्यकता लोगों को हर युग में होती है, हमारे युग में भी जब हम भविष्य की ओर आगे देख रहे हैं। होशे के समय के इस्राएल और यहूदा के समान मसीह के अनुयायियों को भी बुद्धि का अनुसरण करने की होशे की बुलाहट पर ध्यान देना चाहिए जब हम इस संसार के कष्टों का सामना करते हैं। इस पुस्तक से हम देख सकते हैं कि चाहे जैसी भी कठिनाइयों का हम सामना करें, तब भी जब हमें लगे कि सब कुछ खत्म हो गया है, ऐसे समय में भी हम भविष्य की उस आशा को दृढ़ता से थामे रह सकते हैं जो मसीह में हमारे पास है। और हम आश्वस्त हो सकते हैं कि एक दिन परमेश्वर अपने लोगों पर असीमित आशीषों को उंडेलेगा जब मसीह अपनी महिमा में वापस आएगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.